भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 10 | अंक 01 | उदयपुर बुधवार 15 जनवरी 2025 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

नक्काल - एक परम्परा, एक इतिहास

- डॉ. प्रिया सूफ़ी -

पंजाब के कलात्मक इतिहास में लोक नाट्य परम्परा का अपना अलग मुकाम है। राजाओं, रजवाड़ों के आश्रय से परवान चढ़ी यह लोक कलाएँ पंजाब के ग्रामीण पररवेश से गहराई से जुड़ी हैं। जिनमें भांड, नक्काल, ढाढ़ी, नट व मरासी इत्यादि का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

मनोरंजन के आधुनिक साधन आने से बहुत पहले भांड और नक्काल अपनी हास्य-व्यंग्यपूर्ण शैली में नकलें पेश कर खुशी के पलों को और भी अधिक मनोरंजक बना देने में खासे मशहूर थे। 'नाट्य-कला' के समान ही 'नकल कला' विविध कलाओं का संगम है। नक्काल को एक ही समय में अच्छा गायक, संगीतज्ञ, नर्तक, अदाकार और नाटककार होना पड़ता है और यह कोई साधारण बात नहीं है।

परिभाषा तथा स्वरूप की दृष्टि से देखा जाए तो नकल स्वांग अथवा सांग, पंजाबी में कहें तो 'रीस' का ही दूसरा रूप है। कोश के अनुसार नकल का अर्थ है अनुकरण। अथवा किसी वस्तु का अनुकरण कर लगभग उस जैसा व्यवहार करना 'नकल' है। पंजाबी संस्कृति में नकल और सांग (स्वांग) मनोरंजन की सर्वाधिक प्राचीन शैली है। एक नक्काल के कथनानुसार- 'नकल उस चीज़ को कहते हैं जो हो कर मिट जाए, जो चीज़ खत्म हो जाए, उसको नकल कहते हैं। वास्तविक तो केवल परमात्मा की, वाहेगुरु की, अकाल पुरुष की जात है जिसने सदा कायम रहना है। हम अकेले नक्काल नहीं, यह सारा संसार ही नकल है। एक अन्य पररभाषा के अनुसार- नक्कालों द्वारा खेले जाने वाले हास्य रसी नाटक को नकल कहते हैं। पंजाबी की लोक धारा पुस्तक के अनुसार- नकल में स्वांग, संवाद, नृत्य और संकेतों के माध्यम से नाटक रचा जाता है।

हमारे जीवन में नकल का महत्त्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा के प्राथमिक दौर में बालक अपने परिवार के बजुर्गों और अध्यापकों आदि की नकल करता हुआ ही जीवन के जरूरी सबक सिखता है। नक्कालों की ही कस्बई जातियाँ हैं- भांड और मरासी। हालांकि मरासी जाति केवल नकलें तक सीममि नहीं है बल्कि यह गायन और वादन इत्यादि अन्य विधाओं में निपूर्णता हांसिल कर और विविध कलाओं से जुड़े हैं। जबकि भांड लोगों का स्वांग रच कर, चुटकुले सुनाकर, मखौल उड़ाने वाली बातें कर मनोरंजन कर मनोरंजन करते हैं। यह केवल दो लोग होते हैं जिनमें से एक कुछ ज्ञान की, कुछ समझदारी की, कुछ चतुरतापूर्ण बाते करता है जबकि दूसरा जानबूझ कर उन्हीं बातों को तोड़ मरोड़कर हास्य उत्पन्न करता है। जिससे पहले वाला हाथ में पकड़े चमड़े के टुकड़े से उसे मारता है। दूसरा चमड़े की मार को हाथ पर तो कभी कूल्हे पर सहता मजाकिया बातें बोलते हुए हँसी उत्पन्न करता है।

भांड और नक्कालों में यही अंतर होता कि भांड दो जन होते हैं। उनकी भाषा निम्न स्तरीय तथा हास्य दोयम दर्जे का होता है। जबकि नक्काल समयानुसार आदर्श भाषा, स्तरीय बातें तथा शिष्ट हास्य उत्पन्न कर सभी से प्रशंसा पाते हैं।

नकल कला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि काफी समृद्ध है। प्राचीन काल से ही यह कला पंजाब के राजाओं, रजवाड़ों एवं आम जनता के मनोरंजन का लोकप्रिय साधन रही है। कुछ विद्वान मरासी, डूम एवं भांड आदि को हिन्दू जाति का मानते हैं जो हिन्दू राजपूत राजाओं के दरबार में अपनी कला कौशल का प्रदर्शन कर आजीविका कमाते थे।

मुसलमानों के पदार्पण के बाद यह सब मुसलमान हो गए। इसका सबसे बड़ा कारण हिन्दू समाज द्वारा इन्हें क्षुद्र अर्थात् निम्न जाति कह कर तिरस्कृत किया जाना रहा होगा। जबकि मुसलमानों में कोई क्षुद्र अथवा अनुसूचित जाति नहीं होती तो समानता के अधिकार हेतु यह सब मुसलमान हो गए।

कुछ अन्वेषकों का मत है कि यह लोग इस धरती (पंजाब) के मूल निवासी थे। आर्य लोगों के आविर्भाव तथा यहाँ निवसित होने के बाद उन्होंने इन लोगों की नाट्य कला को भी अधिकृत कर लिया और इन्हें निम्न अथवा घटिया बोल कर तिरस्कृत किया जाने लगा। बाद में इन लोगों ने अपनी नकलों द्वारा उच्च जातियों को निंदित करना आरम्भ कर दिया।

इस कला की प्राचीनता के विषय में डॉ. हरचरण सिंह का मत है- 'साहित्यिक एवं सामाजिक अन्वेषकों के अनुसार पंजाब की नाट्य परम्परा ईस्वीपूर्व काल से निरन्तर प्रवाहमान है।'

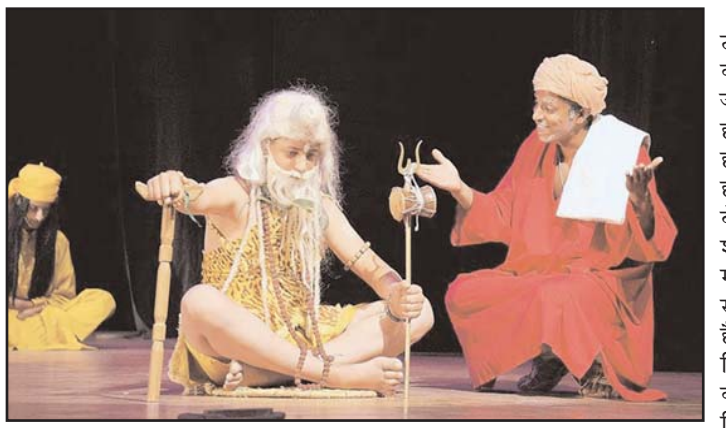

ऋषि पाणिनि ने अपने महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ 'अष्टाध्यायी' में इस प्रकार के लोगों को स्थान दिया है। मुगलकाल में नकलें न केवल अत्याधिक प्रचलित थीं बल्कि लोगों के मनोरंजन का सर्वाधिक लोकप्रिय साधन भी थीं। राजाओं, रजवाड़ों की खुशी हेतु अथवा त्योहार, मेले व विवाह आदि के मौके पर नकलों के अखाड़े लगा करते थे। मुल्ला कश्मीरी ने अपनी पुस्तक 'रंगे-इश्क' में नक्कालों की कला का ज़िक्र किया है। पंडित रत्ननाथ सरशार ने भी अपनी पुस्तक 'अफ़साना ए आजादी' में इस लोक कला के बारे में लिखा है। 17वीं शताब्दी में लिखे दामोदर के किस्से में हीर के विवाह के अवसर पर भांड, भगतिए अर्थात् नक्कालों का वर्णन मिलता है। वारिस शाह की हीर में भी नक्कालों का ज़िक्र है।

सिक्ख इतिहास में भी नकलों के संबंध में कई हवाले मिलते हैं। ज्ञानी ज्ञानसिंह एवं रत्नसिंह भंगू ने लिखा है कि आनंदपुर साहिब में गुरू गोबिंदसिंहजी के दरबार में भी नक्कालों के एक टोले ने मसंदों की करतूतों के विषय पर बेहद प्रभावशाली नकल पेश की थी जिसका गुरू साहब पर गहरा असर हुआ था और इसके बाद ही उन्होंने मसंदों को सबक सिखाने का हुक्म दिया था। फर्खूशियर के दिल्ली दरबार में भी नक्कालों ने सिक्खों की बहादुरी की नकल पेश की थी। इसके भी कई पुख्ता सबूत मिलते हैं।

इस विषय में प्रसिद्ध विद्वासन डॉ. अजीतसिंह औलख लिखते हैं- ' 1920 से 1947 तक का समय नकलों के इतिहास का सुनहरी समय कहा जा सकता है। इस समय के दौरान कई पेशेवर नक्काल अपनी टोलियाँ बना कर नकलें दिखाते रहे। हर विवाह के अवसर पर इन्हें बुलाना आवश्यक समझा जाने लगा।'

1947 के विभाजन के वीभत्स समय का इस कला पर सबसे अधिक बुरा प्रभाव पड़ा। क्योंकि कुछेक को छोड़ कर इस कला से जुड़े लगभग सभी कलाकार मुसलमान धर्म से संबंधित थे। केवल मलेरकोटला रियासत को छोड़कर बाकी पूरे पंजाब से अधिकर मुसलमान पाकिस्तान चले गए। विभाजन के बाद मलेरकोटला की चार पांच नकल मंडलियों ने इस दम तोड़ती कला की जोत को जगाए रखा। मनोरंजन के क्षेत्र में आधुनिक साधनों के प्रचलन ने पारम्परिक कलाओं के क्षेत्र को लीलना आरम्भ कर दिया। इन कलाओं से जुड़े कलाकार रोज़ी रोटी की तलाश में दूसरे व्यवसायों की ओर मुड़ने पर मजबूर हो गए।

आज भी पूरे पंजाब में केवल चार-पांच नकल मंडलियाँ सम्पूर्ण प्रतिकूल हालातों के बावजूद भी इस कला से न केवल जुड़ी हैं बल्कि पूरे मनोयोग से इसे बचाने व इसकी समृद्ध विरासत को संभालने का पुरजोर प्रयत्न कर रही हैं।

नकल मण्डली :

नक्कालों की एक टोली अथवा मंडली में कम से कम 10 तथा ज्यादा से ज्यादा 15 लोग होते हैं। अक्सर यह एक ही परिवार के सदस्य होते हैं। इसमें भाई, बेटा, भतीजा इत्यादि शामिल होते हैं। पूरी मण्डली में एक-दो सदसय ही बाहर से होते हैं, वे भी लगभग इनके रिश्तेदार ही होते हैं। कोई इक्का-दुक्का ही बिल्कुल बाहरी व्यक्ति होता है।

दुआबे में नकल मण्डली 'डेरा' कहलाती है। जिसमें उस्ताद या मास्टर अनुभवी उम्रदराज अपने कार्य में सिद्धहस्त नक्काल डेरे अथवा मण्डली का मुखिया होता है। नकल मण्डली से उसके गाँव का नाम भी जुड़ा होता है। जैसे घनौर वाले नक्काल, डडहेड़ी वाले नक्काल, सींगड़ी वाले नक्काल, बग्गड़ मलसियां वाला, नत्था पंडोरी वाला इत्यादि।

नकल मण्डली में वादक (साजिन्दे), गायक (गवैये), निर्तक (नचनिया) और मसखरे के अतिरिक्त कुछ अन्य सह कलाकार भी होते हैं। आमतौर पर एक मण्डली में बाजा (हारमोनियम)

और ढोलक वाले वादक (साजिन्दे) के अतिरिक्त दो या चार औरतों की पोशाक पहनने वाले नर्तक (नचनिया) लड़के भी होते हैं। मण्डली के बाकी पुरुष सदस्यों में आगाडी (रंगा), पिछाड़ी (बिगला) और तीन-चार और पुरुष कलाकार भी होते हैं, जो नकल की कथा के अनुसार अपनी भूमिका बदलते रहते हैं।

इन कलाकारों को स्वांग अथवा नाटक की तरह बहुत मेकअप (रूपसज्जा) या पहनावे की आवश्यकता नहीं होती, बल्कि ये लोग मौके के अनुसार प्रतीकात्मक रूप से पहनावे में कुछ थोड़ा बहुत परिवर्तन कर कोई भी किरदार निभा लेते हैं। उदाहरणत: एक ही पात्र के सिर पर पगड़ी लपेट कर पुरूष तथा उसी पगड़ी को चुनरी (दुप्पटा) के समान ओढ़ कर औरत बन जाता है। दर्शक उसे उसी प्रकार स्वीकार कर लेते हैं। इसी प्रकार कोई पात्र कानों के पास हाथों को सिर के ऊपर कानों के समान खड़े कर झुक कर चलता हुआ बैल बन जाता है।

नचनिया कलाकार जरूर मेकअप करते हैं, जो हमेशा जरूरत से ज्यादा होता है। इसके साथ-साथ नायक का पहनावा बहुत अच्छा होता है। यह अक्सर सुरीली आवाज वाला गायक कलाकार होता है, जो युगल गीत में नचनिया कलाकारों का साथ देता है। नायक का किरदार एक ही कलाकार निभाता है।

प्रबन्धकीय पक्ष से नकलों को दो वगों में बाँटा जा सकता है - निजी और सामूहिक। लड़के के विवाह, सगाई, जन्म या छठी की खुशी को और रंगीन बनाने के लिए अमीर परिवारों में निजी रूप से नक्कालों को साई (अग्रिम धन) देकर बुलाया जाता है। अखाड़ा घर के आँगन में अथवा गाँव के साँझे स्थान पर लगाया जाता है। जहाँ पररवार के सदस्य, रिश्तेदारों के अतिरिक्त कोई भी दर्शक प्रोग्राम देख सकता है।

सामूहिक तौर पर किसी पीर-फ़क़ीर की याद में सारे गाँव की तरफ से साँझे तौर पर नक्कालों को साई देकर बुलाया जाता है। गाँव के दरवाज़े, साँझे स्थान अथवा यादगार वाले स्थान पर अखाड़ा जुड़ता है। ज्यादतर यह अखाड़ा रात को लगता है ताकि लोग अपने कामों से फ़ारिग होकर आराम से नकल का आनंद ले सकें।

नकल एक प्रदर्शन कला है, जिसका प्रभाव दर्शकों पर कितना और किस हद तक होता है यह भी एक उल्लेखनीय तथ्य है। प्रभाव के पक्ष से नकल को तीन वर्गों में बाँटा जा सकता है। नक्कालों के पास अलग-अलग प्रकार की नकलें उपलब्ध होती हैं जिन्हें वे समय, स्थान और दर्शकों के स्तर के अनुसार खेलते हैं- साधारण, निर्लज्ज, ज्ञानर्द्धक।

साधारण नकलें - इस वर्ग में शामिल नकलों को हर वर्ग के अर्थात् बच्चे बूढ़े, जवान और औरतें सभी देख-सुन सकते हैं। इन नकलों में कोई अश्लील अथवा आचरणहीन घटिया स्तर की बात या हरकत नहीं की जाती। दोहरे अर्थ वाली शब्दावली के प्रयोग से भी परहेज किया जाता है। औरतों के शामिल होने से एक मर्यादा कायम रहती है। अगर कोई अमर्यादित बात नकल में आवश्यक हो तो उसे भी इस प्रकार कहा जाता है कि किसी को महसूस न हो। ऐसी नकलें ही अधिक संख्या में प्रचलित हैं।

निर्लज्ज नकलें - इस वर्ग की नकलों में दोहरे अर्थ वाली अमर्यादित शब्दावली का प्रयोग किया जाताा है, जो अश्लीलता से भरपूर होती है। पुराने समय में अकेले, अविवाहित और कामुक वृति के लोगों की छिपे मनोभावों की पूर्ति हेतु इस प्रकार की नकलें रची जाती थीं। ऐसे नकलों को आम भाषा में चकवीं अर्थात् उत्तेजक नकल भी कहा जाता था। मेलों इत्यादि में ऐसी नकलें खेली जाती थीं।

ज्ञानवर्द्धक नकलें - कुछ लोग नकलों पर अमर्यादित एवं निम्न स्तरीय होने का लेबल लगाते हैं। बहुत से विद्वान इसे दोयम दर्जे का लोक नाट्य मानते हैं, परन्तु नकलों के बारे में ऐसा निर्णय पूरी तरह से ठीक नहीं है। नक्कालों द्वारा ज्ञान से भरपूर एवं विद्ववतापूर्ण नकलें भी खेली जाती हैं। इन नकलों के दर्शक विद्वान एवं बुद्धिजीवी होते हैं। इन नकलों में ज्ञान-ध्यान की बातें की जाती हैं। पुरातन ग्रंथों के श्लोक एवं वैदिक ऋचाओं के उद्धरण देकर अपनी बात को प्रभावशाली बनाया जाताा है। आम दर्शक इन्हें न समझ पाने की स्थिति में ऊबने लगते हैं। हालांकि इन नकलों में बुद्धिमत्तापूर्ण बातों को प्रश्रय दिया जाता है, फिर भी नकलों का मुख्य तत्व व्यंग्य एवं मज़ाक इनमें भी शामिल रहता है।

नकलों का कोई लिखित इतिहास नहीं है। यह मौखिक रूप में ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक सफर करती हैं। हर नई पीढ़ी अपने समय और सामाजिक परस्थितियों के अनुसार नकल के विषय में परिवर्तन कर लेती है। नए व्यंग्य नए उपहास घड़ लेती है। संभवत: यह हर बार हर युग में अपने अनोखे अद्वितीय रूप में विद्यमान रहती है। कुछ अभिव्यक्तियां लिखिसत रूप में अपना अस्तित्व खो देती हैं अपनी सार्थकता गवां कर नीरस हो जातरी हैं। उन्हें केवल मौखिक रूप में ही सुरक्षित तथा जीवंत रखा जा सकता है। नकल कला भी उनमें से एक है।

इकसठ दिन चलने वाले यज्ञ का प्रमाण

–डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'–

मेवाड़ से अश्वमेध सहित दिन आधारित यज्ञ सत्रों के प्रमाण में अभिलेख ही नहीं, यूप भी मिले हैं। पश्चिम भारत में यूप के बहुत सुन्दर प्रमाण देने वाला यही क्षेत्र है। ये लेखांकित हैं और पूरी तरह शास्त्रीय! ये यूप गोल स्तम्भ की तरह ऊंचाई वाले और लिंग के आकार के बने हैं। इनमें भीलवाड़ा जिले के नांदसा गांव का यूप भारतीय विक्रम संवत के इतिहास ही नहीं, वैदिक यज्ञ के स्वरूप, देय दान, पुराण पाठ, स्मृति आदि कई परम्पराओं के अध्ययन और सन्दर्भ, साक्ष्य की दृष्टि से महत्त्व रखता है।

राजस्थान ही नहीं, भारत के यूपाभिलेखों में इस यूप का प्राचीनतम होने से खासा महत्त्व रहा है। इस पर भी खास बात ये कि नांदसा में एक नहीं, दो यूप है और दोनों ही लेखांकित है। वहां मौजूद यूप पर जो लेख है, वह उत्तर ब्राह्मी लिपि में हैं और दायें से बायें और ऊपर से नीचे समानत: लिखा गया है ताकि एक पाठ नष्ट भी हो जाए तो दूसरा बच जाए। है न दूरदर्शिता। या कहें कि आशंका! कोई लिपि और उसका पाठ एक ही स्थान पर बचा रहना चाहिए और जिस भाग में जैसा बचा अथवा टूटा, दिनों को मिलाकर इसको पढ़ा गया!

स्तम्भ लेखों के बारे में यह विधि अशोक के लगभग चार सदी बाद सामने आई। मेवाड़ में शिलालेखों के लेखन को लेकर ऐसे कुछ प्रयोग पहल के रूप में मेरे लिए स्मरणीय है- दो बार लिखना, दो भाषा में लिखना, संवत् को अंकों और शब्दों में लिखना, भाषा में अंकों की गणना, एक ही अभिव्यक्ति को दो यूप पर लिखना... ऐसा क्यों हुआ? लेकिन, यह अच्छा हुआ। नंदसर या नांदसा कई कारणों से उल्लेखनीय है।

इस स्तम्भ लेख में कुल 61 दिन तक चलने वाले यज्ञसत्र का उल्लेख है, बृहद वैदिक यज्ञ का महत्त्वपूर्ण अभिलेखीय साक्ष्य है। मथुरा में इससे छोटे सत्र का उल्लेख मिलता है। यज्ञभूमि के रूप में मेवाड़ मान्य रहा और प्रारंभिक अश्वमेध जैसे बड़े यज्ञ भी हुए जिनकी अभिलेखीय स्मृतियां हैं। सर्वतात ने अपने को अश्वमेध करने वाला कहा है।

इन यज्ञों की स्मृति ब्राह्मण ग्रन्थों में शेष रही और उनके निष्णात लोग ही मार्गदशन करते रहे। शासकों के युद्ध और फिर अपने पराक्रम प्रदर्शन के लिए सत्र सहित यूपांकन भी बड़ा कार्य रहा।

हालांकि नांदसा गांव के निवासी इसका यही महत्त्व समझते हैं कि कभी-कभार कोई लोग इसको देखने आते हैं और इस पर कुछ लिखा हुआ है। वे यह मान्यता भी लिए हुए है कि पांडव कभी इधर आए थे और भरख गांव के मगरे से भीम ने जो तीर चढ़ाकर फेंका था, वह यही है। मुझे 1990 में नांदसावासियों से यह जनश्रुति सुनकर बहुत अजीब भी लगा। फिर याद आया कि ऐसी ही कहानियां राजा अशोक के स्तम्भों के साथ भी जुड़ी रही है। यह भी एक अनूठी बात है कि नांदसा के पास ही पोटला गांव हैं। मालवा में देवास के पास एक पोटला पहाड़ी पर काले स्तम्भों का भण्डार देखने में आता है। वैसे मेवाड़ में गांव-गांव स्तम्भ खड़े मिलते हैं, विशेषकर पुराने गांवों में। नांदोली गांव में पड़ा एक स्तम्भ मांधाता क्षेत्र में यज्ञ का सूचक माना जाता है। भाटोली, सरगांव, भरक, मेहदी, गिलुंड, सोमी, मरमी, सगरेव, घोड़ाखेड़ा, रुंडेडा, वीरपुरा जैसे कई गांव मैंने नापे हैं।

नांदसा वालों को जब मेरे एक अखबार के लेख से सूचना मिली कि यह डेढ़ हजार बरस पुराना है, यह मालवों की दिग्विजय का सूचक यूप है और इसमें संभवत: उसी सोम राजा का जिक्र है जिसका स्मरण विष्णु पुराण आदि में हुआ है तो कुछ ग्रामीणों ने पत्र आदि के माध्यम से मेरा इस बात के लिए आभार माना कि यह तो गजब हो गया! मेरे संग्रह में वे पत्र अभी भी हैं। मैं इस बारे में भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण की रिपोर्ट्स पढ़कर गंगापुर से पैदल यात्रा कर पहुंचा था। मार्ग में दो जनों ने साइकिल पर भी बिठाकर आगे तक पहुंचाने में सहायता की।

इस यूप पर कृत संवत् 282 का अभिलेख है, विक्रम संवत् के नामकरण से पूर्व यही संवत् मान्य था। ईस्वी सन् 226 में चैत्र मास की पूर्णिमा को यह रोपा गया था। तब गणित में इकाई, दहाई सैकड़ा कैसे होते थे, देखिये इसकी पहली पंक्ति –

सिद्धम्।

कृतयोर्द्वयोव्वर्ष शतयोद्वयशीतयो : 200 80 2

चेत्रपूर्णमासीं मस्याम्पूर्वायां...।

इसमें दो सौ बयासी संख्या लिखने के लिए आज की तरह 282 नहीं लिखा बल्कि वर्णों के साथ ही 200, 80 और 2 लिखा गया है। इनका योग 282 होता है, क्या तब तक इकाई, दहाई, सैकड़ा आदि को एकीकृत करके नहीं लिखा जाता था? यह विचारणीय है मगर यह बड़ा सच है कि जिस विक्रम संवत् पर देश को अभिमान है, उसका प्राचीनतम प्रमाण मेवाड़ का नांदसा अपनी कोख में लिए हुए है।

यही नहीं, इस यूप की बदौलत ही देश के कई ख्यातिलब्ध इतिहासकारों के पांव इस गांव में पड़े या वे इसके पास से गुजरे। शायद आज उनकी स्मृतियों के चिन्ह भी मौजूद नहीं है। ये हैं – श्री आर. आर. हल्दर, महामहोपाध्याय गौरीशंकर हीराचंद ओझा, प्रो. डी. आर. भाण्डारकर, डी. सी. सरकार आदि।

बनारस के प्रसिद्ध विद्वान अनंत सदाशिव अल्तेकर ने इसको विस्तार से विवेचन के साथ एपिग्राफिया इण्डिका के लिए सम्पादित किया था। इस स्तम्भ के निर्माण के बारे में कुछ रोचक बातें और भी हैं।

पोथीखाना

जैन वंशावलियां एवं गोत्र

इतिहास अनेक तरीकों से लिखा जा सकता है। इसकी अनेक शाखाएँ और उपशाखाएँ होती हैं। जाति, उपजाति, वंश और गोत्र का भी अपना इतिहास होता है। जहाँ तक वंश और गोत्र की बात है, इस संबंध में वर्तमान में इतिहास लेखन का कार्य दुर्लभ है। यह कार्य बहुत दुष्कर है। श्रमसाध्य और समयसाध्य होने के साथ ही ऐसे सारस्वत कार्य के लिए रूचि और इतिहास दृष्टि भी चाहिये। लेकिन कुछ संकल्प के धनी महानुभाव मुश्किल को आसान करते हैं।

इतिहास में रुचि रखने वाले ऐसे ही विरले सज्जन हैं- श्री शांतिलाल मारू, जिनके संपादन में 'जैन वंशावलियाँ एवं गोत्र' शीर्षक के साथ बड़े आकार की बहुरंगी पुस्तक 2024 में महावीर जयंती को प्रकाशित हुई है। जैन बीसा पोरवाल जाति में बिबलेचा परमार गोत्रीय श्री मारू को अपनी जाति और गौत्र के बारे में जानने की इच्छा हुई और वर्षों तक इसकी खोज में लगे रहे। लगभग डेढ़ दो दशक के अथक परिश्रम के उपरांत श्री मारू ने इस पुस्तक को तैयार किया है।

श्वेतांबर जैन तेरापंथ संप्रदाय के प्रति आस्थावान श्री मारू एक सफल व्यवसायी हैं। समाज की अनेक प्रतिष्ठित संस्थाओं के महत्वपूर्ण पदों पर रहकर उन्होंने यादगार सेवाएँ दी हैं। इन सबके साथ अपनी जाति, इतिहास, परम्परा और पूर्वजों के बारे में जानने का जो जुनून रहा, उसी की फलश्रुति यह पुस्तक है। उनके मन में पीड़ा है कि भारत की स्वतंत्रता के बाद वंशावलियाँ लिखने की परम्परा लगभग विलुप्त हो गई। उससे पूर्व लिखित वंशावलियाँ भी धीरे धीरे मिट रही हैं, रद्दी के भाव बिक रही हैं। उन्होंने बिकती हुई वंशावलियों को प्रेम, संघर्ष और अदालती प्रक्रियाओं के जरिए किस प्रकार विधिपूर्वक प्राप्त किया, यह अपने आपमें एक प्रेरक, रोचक व रोमांचक कहानी है।

शोध-खोज की इस निराली यात्रा में उनके परम सहयोगी और मार्गदर्शक रहे सुप्रसिद्ध इतिहासकार और साहित्यकार डॉ. देव कोठारी। पुस्तक में डॉ. कोठारी जी की विद्वत्तापूर्ण पन्द्रह पृष्ठीय भूमिका है। यह भूमिका इस पुस्तक और वंशावली लेखन के बारे में अद्भुत जानकारी देने के साथ ही अन्य अनेक उपयोगी जानकारियाँ भी देती हैं। डॉ. आनंद बोर्दिया के अनुसार इस पुस्तक में 351 पोथियों का संकलन है, जिसमें 21060 परिवारों का लगभग 1400 वर्षों का अनुक्रमित वर्णन है।

इस ग्रंथ के आवरण पर शिल्प व स्थापत्य कला के प्रेमी, यशस्वी श्रावक, श्रेष्ठिवर्य श्री धरणाशाह पोरवाल द्वारा निर्मित 15वीं सदी के विश्वविख्यात रणकपुर तीर्थ का सुन्दर चित्र, तीर्थ से जुड़ी प्रमुख ऐतिहासिक तिथियाँ और महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी गई हैं। पायोराइट प्रिंट मीडिया द्वारा प्रकाशित लगभग सवा तीन सौ पृष्ठीय इस बहुरंगी पुस्तक के अंत में परिशिष्ट के रूप में बीस चार्ट दिए गए हैं, जिनमें स्वयं के परिवारों की वंशावलियाँ हैं। सम्पादक द्वारा अपने स्मृतिशेष माता-पिता श्रीमती टीलूबाई एवं श्री सरदारमलजी मारू को समर्पित यह पुस्तक सामाजिक इतिहास और वंशावली लेखन के प्रति जागरूकता पैदा करती है। अपनी श्रेष्ठ कुल-परम्पराओं के प्रति गौरव करने एवं इतिहास से सीख लेने की प्रेरणा देती है।

– डॉ. दिलीप धींग

उन्मेष प्रवासी मन उम्दा काव्य संकलन

नींद आंखों में, फिर से आने लगी है
फिर नए ख्वाब हमको, दिखाने लगी है
ज्यों क्षितिज पर उगे, भोर उजली किरण
गुनगुनी धूप से, गुनगुनाने लगी है
ज्यों बहे प्यार से,मंद शीतल पवन
तन में सिरहन सी,फिर से जगाने लगी है

'उन्मेष' काव्य संग्रह की 'जिन्दगी' शीर्षक से यह कविता जिंदबी के आशावादी स्वरों को गुंजायित करती है। कविता में भावों की उमड़ती सरिता को लेखिका कुछ इस तरह आगे बढ़ाती हैं-

ज्यों उमगति नदी, पी से मिलने चले
चाह मिलन की, फिर से जगाने लगी है
याद आने लगे, नेह के बीते पल
ये जुबां गीत फिर, गुनगुनाने लगी है

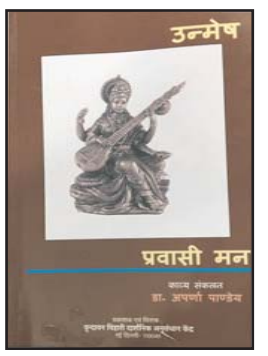

मानव मन सहज संवेद्य है। जब भी उसे अपने आसपास कुछ अघटित सा दिखता है , उसका कोमल मन अशांत हो उठता है, और वहीं कविता के रूप में प्रस्फुटित हो कर जन मन की पीड़ा की अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाता है। लेखिका डॉ. अपर्णा पांडेय ने इन भावों को लेखकीय में व्यक्त कर अपनी कविताओं और ग़ज़लों का एक संग्रह रच दिया 'उन्मेष-प्रवासी मन'। इस काव्य संग्रह में सहज स्फूर्त भावों के साथ-साथ कविताओं और ढाका प्रवास के काव्य अनुभव संग्रह की विशेषताएं हैं, जिसकी वजह से कृति दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग को 'उन्मेष' और दूसरे भाग को 'प्रवासी मन' नाम दिया गया है। दोनों भागों के अलग-अलग लेखकीय और अनुक्रमणिका हैं। पुस्तक का द्वितीय भाग अदृश्य शक्ति परमात्मा को समर्पित है। लेखिका अपने कथन में कहती है कि यह खंड उनके ढाका प्रवास की अनुभूतियों और अनुभवों को संपर्पित है। महिलाओं के मन में रूढ़िवादी सोच के प्रति आक्रोश को महसूस किया, उनसे मुक्त होने की छटपटाहट देखी जो इस खंड के लेखन की प्रेरणा बनी हैं। किताब में कुल 53 कविताएं और 15 गजलों का इंद्रधनुष है।

लेखिका के काव्य सृजन में स्वस्फूर्त भाव इंतज़ार, चिंता, आशा, प्रेम, संयोग, वियोग, आनंद, समाज और दर्द की भावनाएं स्पष्ट दिखाई देती हैं। 'माँ शक्ति' कविता में माँ दुर्गा की शक्ति की प्रभावी आराधना की गई है। 'प्रभु-गुण' कविता भी प्रभु की महिमा का बोध कराती है। अध्यात्म भाव से प्रेरित कविता 'ओम-नाद' की पंक्तियाँ देखिए-

ओम-नाद की ब्रह्म ध्वनि से, गूंजता भारत सारा।
ऋषियों की पावन वाणी से, भाग रहा अंधियारा ।।

'कबीर' नामक काव्य में कबीर की वाणी को ध्वनित किया है-

राम रहीम लड़ मुए, भेद मिटा ना कोई ।
सुलझा सुलझा थक गया, देख कबीरा रोये।।
जप - माला छापा तिलक, सरे न एको काम।
या कलयुग में पूज रहे, निर्गुण, मूर्ख, पाम ।।

'ऋषि दयानंद' कविता में उनकी शिक्षाओं और विचारों को दर्शाया है। विमूढ़ मन में सांसारिकता, भौतिकवाद और आध्यात्म का अनूठा मेल है-

कंटकों के पथ पर तू, ढूंढता क्यों फूल भोले।
स्वार्थ के संबंध सारे, होना है बस प्रभु का होले।।
साथ जाएगा कुछ नहीं, सच यही पर छूट जाएगा।
फिर भला कहे मनुज तू, पाप दुनिया में कमाए।।

'शरद-ऋतु' कविता में शरद का प्रकृति का रमणीक चित्रण और आनंद का बड़ा ही मनोहारी वर्णन किया है-

शरद की ऋतु है आई, सुहाना रूप है लाई,
कि अब आकाश है निर्मल, मृदु-मंथर पवन भू पर।
हरसिंगार के सुंदर, बिखरते भूमि पर चादर,
कि मन होता प्रफुल्लित है,तन है फूल सा निर्मल।।

कर्म का संदेश देते हुए 'इतिहास का निर्माण' कविता में कहती हैं-

' सूर्य' बन कर तू उग फिर, विश्व के आकाश में।
कीर्ति किरणों नए, इतिहास का निर्माण कर।।

'ध्यान बहुत है' कविता की ये पंक्तियों का सुंदर भाव देखिए-

सद- विवेक, सद-जान मुझे दो
पत रखना उम्मान बहुत है।
बस विवेक का साथ न छुटे
प्रभु चरणों में ध्यान बहुत है।

'मिट्टी' कविता बालमन को समर्पित है जिसमें बालमन को तरंगित करते हुए जीवन में आगे बढ़ने का संदेश है-

नर से नारायण, तो बन ही जाता है,
कर्मों की रेखा जब, जीवन बन जाती है।
भव-रूपी सागर में, कर्मों को चुनने दो,
चिंतन के चप्पू, जीवन को मुड़ने दो।

'ख्वाइश नहीं' ग़ज़ल की बानगी की चंद भाव देखिए-

उसूलों पर हो कायम तू, प्रलोभन हो भले कितने
नजारे बन के महकेगा, ये जीवन तक यकीं तेरा।

'दीवार गिराई जाए' प्रेम को समर्पित बहुत ही भावपूर्ण सृजन है-

अब चलो प्यार की, इक दुनिया बसाई जाए
भाव केसर से हो, बगिया वो लगाई जाए
जहां न जाती, भाषा, धर्म की दीवारें हों
चलो मिल कर चलें , दीवार गिराई जाए
यार के जज्बे से, नई पौध जो पैदा होगी
फिजा में खुशबू की, सौगात फिर लाई जाए।

इन खूबसूरत और भावपूर्ण रचनाओं के साथ साथ इस संग्रह की अन्य रत्न-गर्भा, मातृभूमि की वेदना, परीक्षा, रक्त, हम बच्चे भारत के, मौकापरस्त, मखौल, है समर्पित आपको प्रेम की पाती हमारी, एहसास, क्यों मिले,अजब दुनियां, किस से कहे और आखिरी जज़्बात, दिल वाले, टूटने वाला दिया है, यूं ही तो नहीं, प्यार बहुत है, मिल चुकाना है, अंदाज़-ए-बयां, सीख लिया, दूर हो, अमोघ, जीवन नदी, समझौता, ऊंचे लोग, प्रीत, प्यार नहीं गुजरता आदि रचनाएं भी सार्थक सृजन हैं जिनमें कोई न कोई सकारात्मक संदेश गूंजता है।

पुस्तक की भूमिका 'डॉ. अपर्णा पाण्डेय की विविधवर्णी काव्याभा' लिखते हुए भारत सरकार के एसएसएसओ के अधीक्षण अधिकारी, तथा कवि, समीक्षक वीरेंद्र सिंह विद्यार्थी ने लिखा कि डॉ. अपर्णा पाण्डेय के इस संकलन के विश्व-विधान में प्रकृति के समृद्ध उपादान तथा सौंदर्य को इंद्रिय- संवेद्य बनाकर प्रस्तुत करने का श्लाघ्य प्रयास किया है। यहां केवल व्यक्तिगत प्रेम की धमाचौकड़ी ही नहीं, सामाजिक पीड़ा की चीख पुकार भी है। कविता की कलात्मकता के अन्वेषण में कवियित्री का परंपरा-बोध प्रखर रूप से उभरता है परंतु वह जड़ता को दृढ़ता से तोड़ता हुआ, जूझता हुआ भी दिखाई पड़ता है। शिवराज श्रीवास्तव और हाई कमीशन ऑफ इंडिया, ढाका के निदेशक जयश्री कुंडू के अभिमत भी भूमिका के बाद दिए गए हैं। लेखिका ने यह कृति अपने स्व. पिता आचार्य लाल बिहारी शास्त्री और माता स्व. कृष्णा देवी को समर्पित की है। मां शारदे की प्रतिमा लिए कत्थई रंग में आवरण अत्यंत सुंदर और क्लासिक है। वृंदावन बिहारी दार्शनिक अनुसंधान केंद्र, नई दिल्ली से प्रकाशित 101 पृष्ठीय इस पुस्तक का मूल्य 120 रूपये है।

– डॉ. प्रभात कुमार सिंघल

स्मृतियों के शिखर (197) : डॉ. महेन्द्र भानावत

मांडू की धरती का वैभव

इतिहास को तोड़ मरोड़कर उसे अपने अन्दाज से प्रस्तुत करने की हमारी आदत बहुत पुरानी है। बड़ेरों ने जो कुछ लिख दिया उसे उसी रूप में स्वीकार कर 'बड़ो हुकम' कहने वालों ने बड़ा अनर्थ भी किया। नतीजा यह हुआ कि बहुत सारा असली इतिहास इति बनकर रह गया और उसका ह्रास किंवा हास ही अधिक हुआ। इस झमेले में सर्वाधिक लू पुराने खंडहरों, महलों, हवेलियों को लगी। इसीलिए ये हमें बड़े रहस्य रोमांच भरे अजूबे और अद्‌भुत तो लगते हैं पर सही जानकारी के अभाव में भ्रमित करते और भटकन देते भी लगते हैं।

इतिहास जहां मौन होता है, लोकसंस्कृति वहां मुखरित होती है। लोकसंस्कृति का इतिहास किसी काल-अकाल का हनन नहीं होता। उसकी लिखावट किन्हीं पट्टों परवानों पर नहीं होकर लोक के हिये पर होती है। गीत गाथाओं तथा कथा वार्ताओं द्वारा पीढ़ी-दर- पीढ़ी, कण्ठ-दर-कण्ठ जो कथा किस्से लोक की जबर्दस्त घरोहर और जीवनधर्मी सांस्कृतिक सरोकार बने हुए हैं वह क्या इतिहास नहीं है? संस्कृति नहीं है? यह लोक का इतिहास, मात्र पढ़ने या देखने की वस्तु नहीं होता। इसके साथ कई काल और शताब्दियों के लोकमानस की जीवन गंगा प्रवाहित होती मिलती है। स्वर, ताल, लय और नृत्य नाट्य की लोकानुरंजनी यह विरासत किसी की वैयक्तिक थाती नहीं होती। पूरा देश काल समाज उसके साथ जुड़ा होता है। वह सर्वजन की, सर्वकाल की प्राचीन होती हुई भी, नित नवीन लगने वाली होती है, इसीलिए वह शाश्वत है। मांडू की धरती का भी कुछ ऐसा ही वैभव है ।

मांडू की धरती बहुत-बहुत पुरानी है। यहां एक-एक कर 67 राजा हुए। 61 तो हिन्दू राजा ही हुए। मुसलमान तो बहुत बाद में आये। अकबर यहां संवत् 1732 में लड़ने आया था। वह 200 वर्ष से अधिक जीवित रहा। मांडू को मंदू ने बसाया। इन्हीं के नाम पर इसका मांडू नामकरण हुआ।

मंदूजी पाताल के राजा थे। वे कृष्ण के भी पहले हुए। पहले इन्होंने मंडोवर बसाया, जोधपुर के पास। यही रावण ने इनकी लड़की मदोधरी से विवाह किया था। रावण जब अभिमानी बन गया और मंदूजी पर ही अपना आधिपत्य जमाने लगा तब मंदूजी ने वैसा करने की बजाय मंडोवर ही छोड़ दिया और मांडू आगये। यहां तथाकथित बाजबहादुर का महल मंदूजी ने ही बनवाया।

पहले ये नाग थे। नाग से नर बने। बलदेव, लक्ष्मण और कृष्ण भी पहले नाग थे। नाग की उम्र एक हजार बरस की होती है। पांच सौ बरस के बाद इनमें पंख आने शुरू होते हैं। नाग सदा ही जहर लिये होते हैं जबकि सांप विषविहीन होते हैं।

मंदूजी बड़े दानी थे। इनके पास एक-एक लाख गायें रहती थीं। हजार-हजार गायों का तो ये दान करते थे। गज घोड़े भी इनके पास कई थे। दान में तप चलता। तप से तेज चलता। तेज से लक्ष्मी फलती। कर्ण भी ऐसा ही दानी था। जब वह स्वर्ण दान करता तो उसके पास अच्छे-अच्छे राजा और ठाकुर तक भिखारी बन दान लेने आते। दान कभी निष्फल नहीं जाता।

मांडू में तब 12 रूपया मन घी था। मंदिरों में लोग घी चढ़ाते। घी चढ़ाने की बोली भी लगती और बोलमा भी होती। दस मन से लेकर पच्चीस मन तक तो अमूमन कोई भी घी चढ़ाता। आज भी चढ़ाने वाले बिना किसी खोजखबर के चुपचाप मणो घी चढ़ाते हैं। पहले मांडू में राजा ही रहते। यह धार तक फैला हुआ था।

इसी मांडू में राजा विक्रमादित्य तपे। विक्रमादित्य और भी कई जगह तपे। वहां भी तपे जहां तांबावती नगरी बसाई। इसी तांबावती में महाकालेश्वर का प्रादुर्भाव हुआ। एक समय तांबावती में जल नहीं बरसा। तब सभी लोगों ने सामुहिक उजैणी की। समूह भोज में शिव से अरजी की कि पानी बिना सब कुछ नष्ट हुआ जा रहा है। शिवजी रीझे। पानी बरसा। हाय हाय मिटी। अकाल दुष्काल से छुटकारा मिला तब सबने मिलकर महाकालेश्वर की स्थापना की और उजैणी नाम दिया। वही उजैणी आज का उज्जैन बना हुआ है।

मंडोवर देखने के बाद यह इच्छा बलवती हो गई कि मांडू अवश्य देखना चाहिये। दोनों महानगरों की स्थापत्य कला और संस्कृति वैभव उस समय के जीवनधर्म और सांस्कृतिक परिवेश की पारदशियां देते हैं। तब से अब तक कई सत्ता-पुरुष आये और गये। राजे बदले। महाराजे बदले। राज्य बदले। संस्कृति बदली। धर्म बदला। आक्रमण, अत्याचार, दमन, अनाचार सब कुछ हुए। कई असली नकली हुए और नकली असली बन बैठे, मगर धरती तो वही की वही रही। इसकी मूल गंध तो आज भी देखी पहचानी जा सकती है पर कौन अध्ययन अन्वेषण और परख-पहचान कर पाता है!

मांडू के बहुत से खंडहर आज भी अबोले हैं। जिन नामों से ये पहचान दिये जा रहे है वह थोपी हुई कहानी है। मूल इतिहास किस्से कहानी कथन कुछ और ही हैं। समय जो बलवान बनकर आता है वह सबकी छाती पर चढ़कर अपना शौर्य स्थापित कर देता है। ऐसी स्थिति में सत्य जितना चमकदार होता है उतना ही धुंधला दिया जाता है। आज तो सबके सब महलों-खंडहरों पर मुगल संस्कृति का मुलम्मा चढ़ा हुआ है।

अशर्फी महल, हिंडोला महल, जहाज महल, रूपमती महल, दाई महल, लोहानी द्वार, होशंगशाह का मकबरा सबके सब असलीयत से कोसों दूर हैं। किसी समय यहां नौ लाख जैनी और सात सौ के करीब जैन मंदिर थे। आज सारे मंदिर मस्जिद बने हुए हैं।

5 नवंम्बर 1985 को पहली बार मांडू की माटी का स्पर्श किया। साथ में थे लोक देवता कल्लाजी के अनन्य सेवक सरजुदासजी और डॉ. सुधा गुप्ता। मंडोवर में भी हमारा वही साथ था। मांडू घूमते सहज ही में एक गाईड मिल गया, जिसने अपने को आदिम कहा। वह आदिम आदिवासी ही था। वह आधुनिक गाइड नहीं था। उसी धरती का जाया जन्मा था। यहीं उसकी तीन-चार पीढ़ियां गुजरी थीं ज्यादा भी गुजरी होंगी। उसने हमें वे सारे महल खंडहर दिखाये। उनके रहस्य-रोमांच भरे अन्तर किस्से बताये। हम चुपचाप उन्हें सुन अपनी आंखें विस्फारित कर चारों ओर निहारते रहे। खंडहरों की अन्त:ध्वनियों में अपने अन्तर को गुंजाते रहे। चक-छक होते रहे।

यह बड़ा अचरज ही रहा कि 'लोहनी द्वार' के नाम से यहां कोई द्वार नहीं है बल्कि वे तो गुफाएं हैं- पांडवों की गुफाएं। पांडवों ने ही इन्हें बनाई। यहीं उन्होंने अज्ञातवास किया था। भील मीणे बनकर रहे थे। कुंती भी रही उनके साथ। पानी गुफाओं में भी रिस रहा था। नीलम के पहाड़ तोड़-फोड़ कर कैसे कितनी गुफाए बनाई होगी। कितना समय लगा होगा। कितनी सख्त और ठोस गुफाएं हैं ये और आसपास फैले पहाड़। नीचे गहरा निर्जन वन। पहाड़ में पत्थर फोड़कर उगते केल वृक्ष।

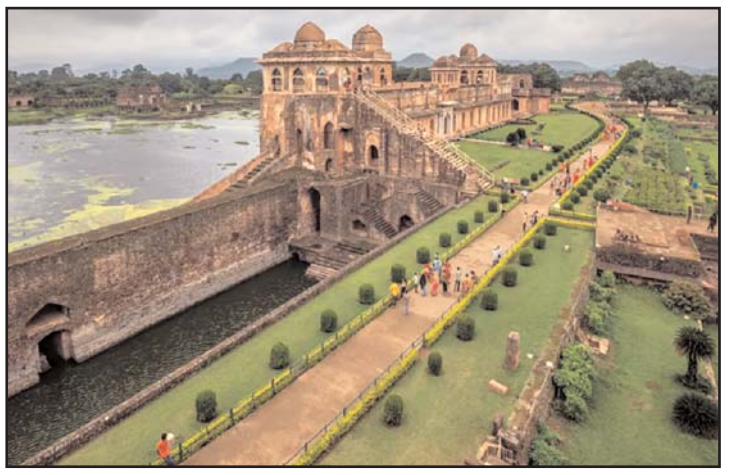

कौन देखता है इन्हें यहां कौन पानी देता है। पांडवों की तपस्या और यज्ञ का फल कि आज भी यह भूमि अपने तप का फल दे रही है।

पांडू के साथ कुंती हमेशा ही रही। तब मांडू की बस्ती इन गुफाओं से दूर थी। कुंती के पति पांडू अकाल मौत मरे। पांडू फिर हिमालय गलने चले गये। वहां जाकर चोला बदल लिया। अब जो हिममानव कहलाते हैं, वे ये ही पांडव है। द्रोपदी भी इनके साथ है। सब अभी भी तपस्या रत हैं। ये संत हैं।

संत दस-दस हजार बरस की तपस्या करते हैं। फिर इन पांडवों को तो अभी ढाई हजार बरस मात्र हुए हैं। ये पांडव हवाभक्षी है। फल खाते हैं। पाप से सदा दूर रहते हैं। हिमालय में तो सदा ही पापनाशिनी गंगा का प्रभाव है। प्रायश्चित के लिए ये वहां गये तो अमर हो गये।

ये हिममानव ग्यारह-साढ़ा ग्यारह हाथ के हैं। इनकी वाणी तब की ही वाणी है जिसे कोई आज का मनुष्य नहीं समझ सकता। पाप की

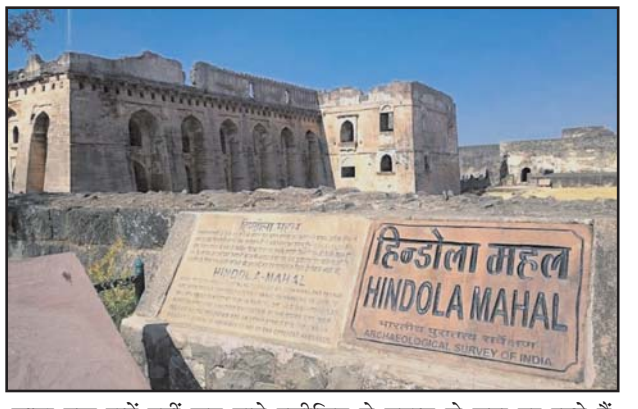

छाया तक इन्हें नहीं लग पाये इसीलिए ये मनुष्य से सदा दूर रहते हैं और उसे देखते ही भाग जाते हैं। ऐसे संत हमारे देश में अन्यत्र भी तप रहे हैं। राजस्थान में बांसवाड़ा के पहाड़ों में कोई तीन हजार बरस पुराना एक संत ऐसा है जिसके एक टांग ऊंट की है और एक मानव की है।

गुफाओं के पास एक लौहखंभ जमीं में गड़ा हुआ है। यह खंभ आल्हा ऊदल जब लड़ने आये तब अपने साथ लाये थे। इसके सहारे रस्सा बांध तोपें ऊपर चढ़ाई गई थी। ऐसे नौ खंभ यहां और लाये गये। ये महुआ से लाये गये। गुफाओं के ऊपर का पूरा भाग खंडहरों का वैभव लिये है। यहां एक सरकारी बंगला बनवाया गया जो ज्यों-ज्यों बनता रहा, उजड़ता रहा। यहां यह सुना गया कि कोई अदृश्य आत्मा ऐसी है जो कुछ भी होने नहीं देती है।

मांडू का सर्वाधिक आकर्षण बाजबहादुर और रूपमती के तथाकथित महल है। कहा जाता है कि दोनों का अनन्य प्रेम आज भी यहां वातानुकूलित है। रूपमती की संगीत-लहरी में सुधबुध खोया बाजबहादुर आज भी कई रसिकों को प्रणय में आकंठ डूबने का आलंबन दे जाता है।

बाजबहादुर के महल, चाहे वे जनाना हों या मरदाना, अपने स्थापत्य में कितने वैभव पूर्ण रहे होंगे। उनके गोखड़े, कांच का काम और पच्चीकारी देख तब का शाही जीवन और उसे जुड़ी कला सांस्कृतिक रूचियों का पता लगाया जा सकता है। पर बाजबहादुर कौन था? क्या था? किसने बनाया उसको बादशाह? किसने कहा नवाब? कहां थी रूपमती रानी? किसकी रानी थी वह?

सच तो यह है कि न रूपमती रानी थी न बाजबहादुर बादशाह। रूपमती रुक्साना थी। राजपूत कन्या नहीं। इसका अपहरण कर लाया था जयपुर का नाहर सिंह। यह इतिहास प्रसिद्ध राजा मानसिंह का भाई था। जब जयपुर पर मुसलमानों ने आक्रमण किया और राजपूत बालकी को लेकर भाग गये तो नाहरसिंह को गुस्सा आया। फलस्वरूप वह एक मुसलमान कन्या का अपहरण कर मांडू चला गया। यही कन्या रूक्साना थी। नाहरसिंह ने ही तब नर्मदा व सूर्यदर्शन के लिए रूपमती का महल बनवाया था। मांडू तब उजड़ चुका था।

जयपुर से जो मुसलमान राजपूत बालकी को ले भागा, रुक्साना उस मुसलमान की बहिन थी। नाहरसिंह इस समय 63 वर्ष का था जबकि रुक्साना केवल 23 बरस की थी। नाहरसिंह की मृत्यु के बाद बाजबहादुर रूक्साना के सम्पर्क में आया और उसे हिन्दू कन्या घोषित कर उसका नाम रूफाली कर दिया। इस समय रूफाली 60 बरस की थी।

नाहरसिंह की मृत्यु के बाद रूक्साना जब विधवा होगई तब उसने अपनी जाति के लोगों को बुलाया। इस बुलावे में बाजबहादुर भी आया। दोनों के बीच प्रेम हो गया। इन्होंने गाय का मांस खाना शुरू कर दिया। जिन हिन्दुओं ने रुक्साना का साथ दिया वे मुसलमान हो गये और जो साथ नहीं देना चाहते थे, वे भागते बने। इस प्रकार मुसलमानों का आधिपत्य हो गया ।

इन मुसलमानों का उद्‌भव मूसल से हुआ। मूसल से मुसल्ल बना और मुसल्ल से होते-होते मुसलमान हो गया। बैलों के गले में जो खूंटी डाली जाती है वह मूसल कहलाती है।

असल में, मालवा में कोई वीर रहा नहीं। सभी डरपोक थे इसीलिए नाहरसिह ने मांडू जाकर अपना झंडा गाड़ दिया। रूफाली ने मरते दम तक अपना भेद किसी को नहीं दिया। अपने कुल के लोगों को भी यह भनक नहीं पड़ने दी कि वह मूसलमान है। बाजबहादुर अल्लाउद्‌दीन खिलजी के बाद हुआ।

जैसे रूपमती, रूपमती नहीं थी, वैसे ही यहां का रूपमती का महल भी कहीं से महल होने का आभास नहीं देता है। एक शाही नहान घर से भिन्न यह कुछ नहीं है पर प्रारम्भ में जिस नाम से जो कुछ उछाल दिया गया, वही नाम चल पड़ा। पर्यटक को जो कुछ कहा जाता है, उसे स्वीकार कर लेता है और इस तरह असलियत से कहीं परे नकली चीजों का पहाड़ बनता रहता है। खंडहरों की खोज करना कोई मामूली बात नहीं है।

दूसरे दिन रूपमती के इस महल तक पहुंचने में दिन की एक बज गई। उस दिन की चिलचिलाती धूप में हम महल को छतरी से चारों ओर दूर-दूर तक अपनी निगाहें फैंकते-फैलाते रहे तभी एक खेत से हवाओं का लाल वेग दिखाई दिया। यह वेग 'दिशाशूल' था। दिशाशूल देख कर कहीं जाने, नहीं जाने की परम्परा हमारे देश में बड़ी गहरी बैठी हुई है। पहले तो दिशाशूल टालकर ही लोग घर से बाहर जाने के लिए पांव निकालते थे। परिवार सहित कहीं जाने के लिए तो दिशाशूल सबके आड़े आता ही आता है। मेरे गांव कानोड़ से उदयपुर आने के लिए सोमवार या फिर गुरुवार ही शुभ रहता है। शेष दिन दिशाशूल लिये होते हैं।

मांडू में खुरसाली इमली के पेड़ों की बहार है। ये पेड़ बड़े घेरघुमेर और अपनी प्राचीनता की पूरी पहचान देने वाले हैं। इनके फल ही फल सब ओर लटके मिलते हैं। इस पेड़ के तने भी बीस-बीस, तीस-तीस फीट की मोटाई लिये मिलेंगे। इसका फल कई दवाइयों में बड़ा उपयोगी है। इसे गोरखजी की आमली भी कहते हैं। राजा भर्तृहरि ने पिंगला को यही फल दिया था। यहां इमली के पांच-पांच हजार बरस पुराने पेड़ भी कहे जाते हैं।

रूपमती महल से लौटते समय रास्ते में मणिपुष्प का झाड़ देखा। इसके फूलों से शहद जैसी खुशबू आ रही थी। ये फूल नौकुली नागों के चढ़ाये जाते हैं। इन फूलों को देखकर सहज ही रावण की याद आ गई जिसने जो सोचा, वह सब कुछ कर दिखाया। केवल तीन चीजें उसकी सोची अधूरी रह गई। एक तो उसने सोने के कनक पुष्पी फूल तैयार किये पर उनमें खुशबू नहीं डाल सका। दूसरी स्वर्ग के सीढ़ी नहीं लगा सका और तीसरी, लका को अखंड नहीं रख सका। बीच रास्ते में एक ओर भारतीजी की समाधि देखी। ये गोरखनाथ भारती थे। इनकी समाधि पर मुसलमानों ने गुम्मद बना रखी है जबकि नीचे डूंडा है और पास में तुलसी का पौधा लहलहा रहा है।

सिंहासन बत्तीसी की खोज :

मांडू की सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपलब्धि सिंहासन बत्तीसी की खोज रही। राजा विक्रमादित्य से जुड़े इस सिंहासन के बारे में बहुत कुछ पढ़ने और लोक जीवन में सुनने को मिला। न्याय के लिए यह सिंहासन आाखिर कहां स्थापित किया हुआ था, इस संबंध का इतिहास अब तक मौन रहा और इससे जुड़े कहानी किस्से भी रहस्य रोमांचक ही प्रतीत होते रहे हैं। सरजुदासजी में लोकदेवता की आत्म प्रविष्ठि ने अचानक हमें उस राह पर मोड़ दिया जिघर जाने के लिए हम बिल्कुल तैयार नहीं थे। कारण कि ऊपर देखने को कुछ भी नहीं रह गया था। यह राह थी लाल बंगला की तरफ लांबा तालाब नामक बस्ती वाली।

हम इस बस्ती के पास वाले चार दरवाजे वाले खंडहर बने कक्ष में पहुंच गये। इसी कक्ष में से सिंहासन प्रकट होता था और सामने फैले विशाल चौक में जनता बैठ जाती थी। चारों दरवाजों पर चार कड़े पहरे रहते थे। जमीन से यह सिंहासन तब सत्रह हाथ करीब नीचे था। आज तो जमीन की सतह से छह-सात हाथ माटी ऊपर आई हुई है। इस सिंहासन को बत्तीस पुतलियां लाती थीं इसीलिए इसका 'सिंहासन बत्तासी' नाम पड़ा ।

राजा विक्रमादित्य इस सिंहासन पर बैठकर न्याय करता। यहां मनुष्य गति (जाति) का हो नहीं, बत्तीस गति का न्याय होता। नाग लोक तक के जीव यहां आकर न्याय पाते। पुतलियां सत-असत का पता लगाकर राजा को देती और राजा तदनुसार न्याय करता। इसमें तनिक भी किसी के साथ अन्याय की गुंजाइश नहीं रहती ।

यह सिंहासन बाईस माणी सोने यानी 264 मन का था। इसे हरसिद्धि ने योग-माया से बनवाया था। हरसिद्धि के बाहुबली नाम का लड़का था पर बहादुर होते हुए भी इसमें न्यायिक बुद्धि नहीं थी। राजा विक्रम के बाद बड़े-बड़े राजा इस सिंहासन के लिए दौड़ पर यह किसी के हाथ नहीं आया। इसे तथा पुतलियों को स्थिर कर दिया गया।

हमारे लिए यह समय बड़ा ही विचित्र आनंद-अनुभव का था। कई सारी कल्पनाओं में हम खो गये। राजा विक्रम और पुतलियों के कई चित्र हमारे मन-मस्तिष्क को कुरेदते रहे। हमने तब बत्तीस पुतलियों के नाम जानने चाहे। कल्लाजी ने सिंहासन स्थल पर बैठकर नाम गिनाने शुरू किये (1) रत्नमंजरी (2) चित्ररेखा (3) रतिवामा (4) चन्द्रकला (5) लीलावती (6) कामकन्दला (7) कामादी (8) पुष्पावती (9) मधुमालती (10) प्रभावती (11) पद्‌मावती (12) कीर्तिमती (13) त्रिलोचनी (14) विलोकी (15) अनूपवती (16) सुन्दरवती (17) सत्यवती (18) रूररेखा (19) तारा (20) चन्द्रज्योति (21) अनुरोधवती (22) अनुपरेखा (23) करुणावती (24) चित्रकला (25) जयलक्ष्मी (26) विद्यावती (27) जगज्योति (28) मनमोहनी (29) वैदेहा (30) रूपवती (31) कौशल्या (32) किलंकी।

मांडू के कई किस्से बड़े बांके और रस फांके हैं पर कौन विश्वास करने वाला है।

शब्द रंजन
उदयपुर, बुधवार 15 जनवरी 2025

सम्पादकीय

पर्यटन स्थलों का आकर्षण

पर्यटन स्थलों की भूमिका कई दृष्टियों से बड़ी महत्वपूर्ण है। ये स्थल मानव सभ्यता को जीवन्त करने वाले इतिहास दर्शन के दस्तावेज ही नहीं होते, हमारी अपनी जीवनधर्मिता के समग्र परिदर्शन के नियामक भी होते हैं। साहित्य, संस्कृति, कला, स्थापत्य, धर्म, दर्शन का कोई पक्ष इनसे अछूता नहीं रहता। पर्यटन स्थलों के साथ-साथ संग्रहालयों की भूमिका भी चिन्हित हुई है। ऐसे विशिष्ट तथा अति विशिष्ट संग्रहालय हैं जहां किसी समय की सभ्यता, जाति, वर्ग, धर्म, संस्कृति, कला का ही मूल्यवान बल्कि बेजोड़ संग्रह देखने को मिलता है।

ऐसे संग्रहालयों के रखरखाव पर भी अधिकाधिक धन-राशि खर्च होती है किन्तु ऐसे संग्रहालय तथा पर्यटन स्थल भी हैं जहां एकबार जो कुछ खर्च होना था, वर्षों से वे वैसे के वैसे बने हुए जीर्ण शीर्ण की स्थिति लिए भी हैं। ऐसे संग्रहालय भी हैं जहां देखने को विशेष कुछ नहीं है किन्तु वे किसी विशिष्ट गौरव तथा आदर्श से जुड़े हुए हैं।

संग्रहालय एवं पर्यटन स्थलों का महत्व तभी सिद्ध होता है जब वे आम आदमी के लिए सुलभ हों। यह तभी सम्भव है जब उनके प्रवेश टिकिट आम व्यक्ति के अनुकूल हों। कई संग्रहालय ऐसे हैं जहां की टिकिट दर दर्शकों को भारी पड़ती है। वे बेमन उत्सुकतावश टिकिट खरीदते हैं किन्तु उन्हें देख लौटकर निराश होते हैं।

यह सत्य है कि निजी संग्रहालयों की टिकिट दर बहुत ऊंची होती है। वहां वाहन का रखरखाव ही बड़ा भारी पड़ जाता है फिर उनके आसपास की दुकानों से पर्यटक जो खरीददारी करता है वह भी रिजनेबल रेट लिए नहीं होती। अखबारों में भी कई बार पर्यटकों की ठगाई के समाचार इस बात की पुष्टि करते नजर आते हैं।

ऐसी स्थिति में हर पर्यटन स्थल पर ऐसे बोर्ड, संकेत स्थल हों जहां पर्यटक पुख्ती सूचना पा सके और उसकी यात्रा स्मरणीय बन सके। धर्मस्थलों पर भी जो पर्यटक पहुंचता है वह विशेष उद्देश्य, आस्था, भावना तथा विश्वास लिए होता है। सैकड़ों लाखों करोड़ों का चढ़ावा वैसे ही वहां आता है। उसके अनुसार सुविधाएं वहां नहीं होतीं। वहां भी पर्यटक ठगा जाता है इसीलिए कहावत है- तीरथां जायां मुंडन वै। यह सोचनीय है कि हम पर्यटकों को अधिक से अधिक आकर्षित करें। उनके लिए अधिकाधिक सुविधाएं जुटायें। उन पर इतना आर्थिक बोझा न पड़े कि वह वहां आकर ठगा महसूस करे। सही जानकारी उपलब्ध हो और एकबार देखने के बाद भी वह स्वयं उसे पुन: देखने को प्रेरित हो तथा अन्यों को भी उसे देखने को बाध्य करे।

डॉ. सुषमा शर्मा की पुस्तक लोकार्पित

जयपुर (ह. सं.)। वरिष्ठ साहित्यकार फारूक आफरीदी ने कहा है कि साहित्य समाज को संवेदनशील और सहिष्णु बनाता है एवं सामाजिक बुराइयों के प्रतिकार के लिए प्रेरित करता है। वे 'शब्द संसार' के तत्वावधान में प्राकृतिक योग आश्रम में वरिष्ठ लेखिका डॉ. सुषमा शर्मा की साहित्य समीक्षा की पुस्तक 'कुछ कही, कुछ अनकही, अनसुनी' के लोकार्पण अवसर पर अध्यक्ष के रूप में बोल रहे थे। मुख्य अतिथि बहुभाषाविद डॉ. नरेन्द्र शर्मा कुसुम थे।

आफरीदी ने कहा कि साहित्य में आलोचना का विशेष महत्व है। इससे रचनाकार की कृति का सही मूल्यांकन होता पाठकों में अभिरुचि जगाता है। आलोचक की सही और निष्पक्ष समीक्षा लेखक के सृजन को मान्यता देती है। आज के लेखकों की प्रायोजित समीक्षाएं पाठकों का भरोसा तोड़ती हैं और यह साहित्य के साथ छल है। डॉ. सुषमा ने कहानी, कविता और निबन्धों की एक सौ से अधिक साहित्यिक कृतियों की निष्पक्ष समीक्षाएं करके साहित्यिक विश्वास को बनाए रखने का प्रयास किया है। 'शब्द संसार' के अध्यक्ष और पुस्तक के संपादक श्रीकृष्ण शर्मा ने कहा कि डॉ. सुषमा शर्मा सुदीर्घकाल से साहित्य और शोध कार्यों में साधनारत हैं। साहित्य साधना के फलस्वरूप वे अनेक सम्मानों से समादृत हैं। उनकी यह कृति बहुत श्लाघनीय है। प्रारम्भ में लेखक इंद्रकुमार भंसाली ने लेखिका और कृति का परिचय गिया।

भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति एवं राष्ट्रीय बाल साहित्य समारोह में 82 साहित्यकार सम्मानित

नाथद्वारा (ह. सं.)। सार्थक बाल साहित्य विमर्श, 24 कृतियों का विमोचन, 82 साहित्यकारों, कलाकारों, चिकित्सकों के सम्मान के साथ नाथद्वारा में भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति एवं राष्ट्रीय बाल साहित्य समारोह का दो दिवसीय आयोजन संपन्न हुआ। साहित्य मंडल द्वारा आयोजित समारोह का संचालन संस्था के प्रधानमंत्री श्याम प्रकाश देवपुरा ने किया और अंजीव ने सम्मानित साहित्यकारों का गद्य और पद्य में कृतित्व प्रस्तुत किया।

भगवती प्रसाद देवपुरा की स्मृति में उनके साहित्यिक योगदान और कार्यों पर डॉ. अमर सिंह बधान चंडीगढ़ द्वारा देवपुरा : मैंने जैसे देखे समझे, डॉ. राहुल दिल्ली द्वारा देवपुरा का सृजन एवं चिंतन, डॉ. ज्ञान प्रकाश पियूष सिरसा द्वारा देवपुरा : अनुशासन के पूरक व्यक्तित्व, डॉ. रक्षा गोदावत उदयपुर द्वारा देवपुरा : कृष्ण भक्ति साहित्य के पोषक संरक्षक और उन्नयाक विषयों के साथ - साथ कोटा से रामेश्वर शर्मा रामू भैया, बंशीलाल लड्ढा कपासन, श्रीमती रेखा लोढ़ा भीलवाड़ा, डॉ अंजीव रावत और कोटा से जितेंद्र निर्मोही ने विचार व्यक्त किए।

बाल साहित्य विमर्श में सत्यनारायण सत्य रायपुर राजस्थान द्वारा दादी नानी की कहानियों से दूर होते बालक, डॉ ज्ञान प्रकाश पियूष सिरसा हरियाणा द्वारा बाल साहित्य आज की आवश्यकता, डॉ. नागेंद्र कुमार मेहता भाव श्रीनाथ द्वारा द्वारा वर्तमान समय में बालक बाल साहित्य और नैतिक मूल्य, श्री कृष्ण बिहारी पाठक हिंडौन सिटी द्वारा परी जादूगर रक्षा राजा रानी : बाल साहित्य में कितने आवश्यक, नरेंद्र निर्मल भरतपुर द्वारा बाल साहित्य में पशु पक्षियों का संसार, श्रीमती रेखा लोढ़ा स्मित भीलवाड़ा द्वारा बाल कहानियों में राष्ट्रीय प्रेम एक महती आवश्यकता, श्रीमती विमला नागला केकड़ी द्वारा लोरियों के लोक में बालक एवं श्रीमती रिचा रावत राया उत्तरप्रदेश द्वारा बाल कविताओं में सूरज चंदा और तारे विषय पर अपने शोध परक आलेखों का वचन किया।

समारोह में विख्यात साहित्यकार सुश्री सफलता त्रिपाठी लखनऊ को श्रीमती कमला देवी अग्निहोत्री स्मृति सम्मान, डॉ. वाई. एन. वर्मा उदयपुर, डॉ. एस. एस. पुरोहित श्रीनाथ द्वारा, डॉ. एम.के. सिरोहियां श्रीनाथ द्वारा एवं डॉ. विशाल लाहोटी श्रीनाथ द्वारा को चिकित्सा सेवा रत्न मानद उपाधि से अलंकृत किया गया। प्रसिद्ध मांड गायक हिदायत खान चूई नागौर को डॉ. ताराचंद भंडारी स्मृति सम्मान एवं लोककला मर्मज्ञ की मानक उपाधि से सम्मानित किया गया। प्रोफेसर प्रफुल्ल चंद्र ठाकुर रोसड़ा समस्तीपुर बिहार को भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति सम्मान, आनंद प्रजापति मिर्जापुर उत्तरप्रदेश को डॉ. आर.के. रमन स्मृति सम्मान, डॉ.

रागिनी भूषण जमशेदपुर झारखंड को श्रीमती राजपति देवी उपाध्याय स्मृति सम्मान, डॉ संगीता पाल कच्छ गुजरात को श्री अवध नारायण उपाध्याय स्मृति सम्मान, सुश्री एंजेल गांधी ऊंचाहार रायबरेली एवं कुमारी सृष्टि राज मिर्जापुर उत्तरप्रदेश को श्रीमती गीता देवी काबरा स्मृति बाल श्री सम्मान से पुरस्कृत किया किया गया। इस दौरान कोटा की तीन साहित्यकार महेश पंचोली, विजय शर्मा और विष्णु शर्मा हरिहर को भी सम्मानित किया गया।

बाल साहित्य भूषण की मानद उपाधि के साथ डॉ. अजय जनमेजय बिजनौर उत्तरप्रदेश, डॉ. दयाराम मौर्य रत्न प्रतापगढ़ अरविंद कुमार साहू ऊंचाहार रायबरेली, गौतम चंद्र अरोड़ा सरस वाराणसी उत्तरप्रदेश को पुण्य श्लोक स्वामी भूमानंद तीर्थजी महाराज स्मृति सम्मान, श्रीमती विमला रस्तोगी दिल्ली को श्रीमती केसर देवी जानी स्मृति सम्मान, अनिल कुमार जायसवाल दिल्ली भारत को श्री श्याम सुंदर बागला स्मृति सम्मान, डॉ. सतीश चंद्र भगत बनौली दरभंगा बिहार को बालकृष्ण अग्रवाल स्मृति सम्मान, डॉ. मीरा सिंह मीरा डुमराव बक्सर बिहार को श्रीमती उर्मिला देवी अग्रवाल स्मृति सम्मान, श्रीमती शशि पुरवार नागपुर महाराष्ट्र को श्रीमती श्याम लता शर्मा स्मृति सम्मान, डॉ. शैलजा माहेश्वरी अमलनेर महाराष्ट्र को श्रीमती कमला देवी पुरोहित स्मृति सम्मान, बलदाऊ राम साहू दुर्ग छत्तीसगढ़ एवं कन्हैया साहू अमित भाटापारा छत्तीसगढ़ को रविंद्र गुर्जर अप्पू स्मृति सम्मान, डॉ. श्याम पलट पांडे अहमदाबाद गुजरात को श्रीमती तारा दीक्षित स्मृति सम्मान, गोविंद भारद्वाज अजमेर को श्री शिवचंद ओझा स्मृति सम्मान और डॉ. फकीरचंद शुक्ला लुधियाना पंजाब एवं डॉ. बंशीधर तातेड़ बाड़मेर राजस्थान को श्रीमती पुष्पा देवी दुग्गल स्मृति सम्मान, विजय बेशर्म गाडरवारा नरसिंहपुर मध्य प्रदेश को श्री चमन लाल सिंघल स्मृति सम्मान, श्रीमती वंदना सोनी विनम्र जबलपुर मध्य प्रदेश को श्रीमती सुमन लता स्मृति सम्मान, कालिका प्रसाद सेमवाल रूद्रप्रयाग उत्तराखंड को श्री विट्ठल शुक्ल स्मृति सम्मान, विमल ईनाणी श्रीनाथद्वारा को श्री सज्जन सिंह साथी स्मृति सम्मान से सम्मानित किया गया।

डॉ. शारदा प्रसाद दुबे मुंबई महाराष्ट्र एवं श्री हरि वाणी कानपुर को साहित्य कुसुमाकर की मानद उपाधि, डॉ. चांद कौर जोशी जोधपुर, डॉ रक्षा गोदावत उदयपुर, सुरेश कुमार श्रीचंदानी अजमेर को साहित्य सौरभ की मानद उपाधि, डॉ. सरोज गुप्ता जयपुर, श्री मुकेश कुमार ऋषि आगरा, अमर सिंह यादव ग्वालियर, श्री पूर्णिमा मित्र बीकानेर, शांतिलाल दाधीच शून्य भीलवाड़ा को काव्य कौस्तुभ की मानद उपाधि, जय बजाज इंदौर मध्यप्रदेश, श्रीमती शिखा अग्रवाल भीलवाड़ा एवं श्रीमती मंजू शर्मा जांगिड़ मनी जोधपुर को काव्य कुसुम की उपाधि एवं उमाशंकर व्यास बीकानेर एवं राजेश वर्मा उदयपुर को पत्रकार श्री की उपाधि से सम्मानित किया गया।

इसके अलावा डॉ. ज्ञान प्रकाश पीयूष सिरसा, श्याम सुंदर श्रीवास्तव भिंड मध्यप्रदेश, श्रीमती बसंती पवार जोधपुर, डॉ. जेवा रशीद जैबुन्निशा जोधपुर, श्रीमती मधु माहेश्वरी सलूंबर, डॉ. नीना छिब्बर जोधपुर, श्रीमती विमला नागला केकड़ी, श्रीमती हेमलता दाधीच उदयपुर, श्रीमती सीमा जोशी मूथा जोधपुर, डॉ तृप्ति गोस्वामी जोधपुर, डॉ.विमल महरिया मौज लक्ष्मणगढ़, श्रीमती मीनाक्षी पारीक जयपुर, पारसचंद जैन देवली, विष्णु शर्मा हरिहर कोटा, श्री नरेंद्र निर्मल भरतपुर, कृष्ण बिहारी पाठक हिंडौन सिटी, भारत दोषी बांसवाड़ा, डॉ. विनोद कुमार शर्मा जयपुर, विजय कुमार शर्मा कोटा, पुनीत रंगा बीकानेर, महेश पंचोली कोटा, यशपाल शर्मा यशस्वी पहुना, श्रीदेवी प्रसाद गौड मथुरा, डॉ. अरविंद कुमार दुबे लखनऊ, हरिलाल मिलन कानपुर, डॉ. उदय नारायण उदय कानपुर, प्रदीप अवस्थी कानपुर, राजकुमार सचिन कानपुर, कर्नल प्रवीण शंकर त्रिपाठी नोएडा, श्रीमती मीनू त्रिपाठी नोएडा, रजनीकांत शुक्ल गाजियाबाद, महेश कुमार मधुकर बरेली, कमरेंद्र कुमार कालपी जालौन, श्याम मोहन मिश्रा गोला गोकर्णनाथ को बाल साहित्य भूषण की मानद उपाधि से सम्मानित किया गया।

बच्चों को बीमार होने से बचायें

बच्चों का शरीर फूलों की तरह सुकोमल होता है और वे समझ में भी अबोध होते हैं। अपने शरीर के तापमान से कम या अधिक ताप प्राय: सहन नहीं कर पाते। यह प्रकृति प्रतिकूलता ही उनके बीमार होने का कारण है। यह जबाबदारी अभिभावकों की है कि वे अधिक सर्दी और गर्मी से उनको बचाये। बालकों के आहार विहार और जलवायु को ध्यान में रखते हुवे उनका उचित पालन पोषण करे।

प्रसव काल से एक वर्ष की आयु तक बच्चों की यथोचित देखभाल इसलिए भी जरूरी है। इस संबंध में पर्याप्त ज्ञान और जानकारी के अभाव में हमारे देश में एक वर्ष से कम आयु में ही एक तिहाई बच्चे काल के गाल में समा जाते हैं। शेष में आधे किशोर होने से पूर्व अपनी जीवन यात्रा समाप्त कर लेते हैं। यह दु:खदायीं जानकारी यही इंगित करती है कि हम अपने दायित्व के प्रति सजग नहीं है। इसे गंभीरतापूर्वक समझना चाहिये।

दूसरे फैशन के नाम पर, देवी देवताओं के नाम पर और अधिक लाड़ प्यार के चलते भी हमारे प्रज्ञापराध बच्चो के लिये हितकर नहीं होते जैसे लाड़ प्यार में दिन भर गोदी में उठाये रहना, भारी कपड़ों के बोझ से उनके कोमल शरीर को जकड़े रहना, गरिष्ठ भोज्य अधिक मात्रा में देना, मिट्टी में और खुली हवा में खेलने कूदने से रोकना और जेवर पहनाना। इस तरह के आचरण से बालक का विकास रूकता है, रक्त संचरण में बांधा पड़ती है और अंग प्रत्यंगों पर हानिकारक प्रभाव पड़ता है।

जिन बालकों को प्रकृति के अनुसार जीने का मौका मिलता है उनकी रक्षा स्वयं प्रकृति करती है। जब तक बच्चा दूध पीता है तब तक उसके आहार विहार का आधार उसकी माता होती है। इसलिये मां को भी अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के प्रति सजग रहना आवश्यक है। गर्भधारण के दिन से लेकर जब तक बालक दूध पीता है तब तक बालक का भरण पोषण और संस्कार माता द्वारा ही होता है। यह समय कम होकर भी बहुत महत्व का है क्योंकि यह बालक के जीवन की आधारशिला ही है।

मां का दूध बालक के लिये सर्वोत्तम आहार है। इससे पोषण ही नहीं मिलता रोग प्रतिरोधक क्षमता भी बनी रहती है जो उसे बीमार होने से बचाती है।

मां स्वयं अपथ्य सेवन करेगी या उसके विचारों में कोई दोष होगा तो इसका सीधा प्रभाव बालक के स्वास्थ्य पर पड़ेगा। बालक को अपना दूध न पिलाने या अधिक मात्रा में और अधिक बार दूध पिलाने से, अजीर्ण की अवस्था में अथवा आधी रात को दूध पिलाने से बच्चे के बीमार होने की संभावना अधिक रहती है।

दुग्ध या अन्नभोजी बालक को मैदे से बना गरिष्ठ पदार्थ खिलाने, मैले कपड़े पहनाने, तैल मालिश न करने, गुदद्वार या पूरे शरीर की समुचित साफ सफाई न रखने से, बच्चे द्वारा मिट्टी खाने, समय पर दूध न मिलने से, किसी प्रकार के संक्रमण से, कम सोने से, खेलने के लिये रबर या टीन के खिलौने देने से, भयानक शब्द सुनने या रूप देखने से, हर समय गोद में उठाये रहने से, अफीम आदि देने से भी बच्चे बीमार हो जाते हैं। एक और आदत बच्चो में होती है हर चीज जो दिखाई दे मुंह में लेने की, यह भी बीमार होने का कारण है। गर्भवती मां का दूध पीने से बालक बीमार हो सकता है।

बच्चों को स्वस्थ रखने के लिये निदान परिवर्जनम् वाला सूत्र पहले समझ लेना चाहिये। जो कारण है बीमार होने के उनसे बचाया जा सके तो बालक के स्वस्थ रहने की आशा की जा सकती है। इसके अतिरिक्त भी बालकों का शरीर सुकोमल होता है। उसे उठाते समय ध्यान रखना चाहिये कि उसे कष्ट न हो। कई बार बालक को खेलाते समय हम ऊपर नीचे उछालते हैं यह ठीक नहीं है। बालक के भयभीत होने का डर रहता है और वायु तो कुपित होती ही है।

हाथ पैर हिलाने से बालक प्रसन्न रहता है व्यायाम भी हो जाता है इसलिए उसे पालने में डाल कर हिलाते रहना चाहिये। इससे उसकी पाचन शक्ति ठीक रहती है। जिस बालक में बैठने की शक्ति न हो उसे जमीन पर छोड़ने से बड़ा होने पर कुबड़ा होने की संभावना रहती है। यदि मां के स्तनों में पर्याप्त दूध न हो तो कई बार में थोड़ा गाय या बकरी का दूध पिलाना चाहिये। यदि बोतल से दूध पिलाया जा रहा है तो उसकी साफ सफाई का पूरा ध्यान रखना चाहिये। बालक के आसपास ऐसी कोई चीज न छोड़े जिसे मुंह में लेने पर गले में अटक जाये और प्राण संकट में पड़े।

दूध पीते बालकों को बीमार होने पर यथा संभव औषधियों से बचाना चाहिये। अनेक रोगों में माता को औषधि देने और पथ्य पालन कराने से ही बच्चे स्वस्थ हो जाते हैं। बीमारियों से बच्चों को बचाने के विषय पर बहुत कुछ जानकारी आप तक पहुंची है जिसे अमल में लाने से लाभ मिलेगा ही फिर भी कदाचित कोई बच्चा बीमार हो जाये तो किसी अनुभवी वैद्य की सलाह लेकर ही कोई दवा दी जानी चाहिये।

- डॉ. भंवरलाल शर्मा
पूर्व जिला आयुर्वेद अधिकारी

भारतवर्ष में मकर संक्रान्ति के विविध रूप

- डॉ. कुलशेखर व्यास -

भास्करस्य यथा तेजो मकरस्थस्य वर्धते।
तथैव भवतां तेजो वर्धतामिति कामये।।

मकर संक्रान्ति का पर्व पूरे भारतवर्ष में बड़ी श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया जाता है। यह पर्व अंग्रेजी के माह जनवरी के चौहदवें या पन्द्रहवें दिन ही आता है क्योंकि इसी दिन सूर्य धनु राशि से मकर राशि में प्रवेश करता है, तब इस पर्व को मनाया जाता है। इस दिन से भास्कर यानी सूर्य देवता की उत्तरायण गति प्रारम्भ हो जाती है इसीलिए इस पर्व को कहीं-कहीं उत्तरायणी भी कहते हैं।

भारतीय संस्कृति के अनुसार सूर्य की दक्षिणायन गति को देवताओं की रात्रि एवं उत्तरायण गति को देवताओं का दिन कहा गया है इसीलिए जब सूर्य की दक्षिणायन गति होती है, तब अंग्रेजी माह के 15 दिसम्बर से 14 जनवरी (लीपवर्ष में 15 जनवरी) तक का समय खर मास, मल मास या काला मास के नाम से भी जाना जाता है। उत्तर भारत में पहले इस एक महीने में किसी भी प्रकार के शुभ कार्य नहीं किये जाते थे। मसलन विवाह संस्कार, यज्ञोपवीत संस्कार, गृहनिर्माण, गृहप्रवेश इत्यादि क्योंकि सूर्य की दक्षिणायन गति को नकारात्मकता का प्रतीक माना गया है तथा सूर्य की उत्तरायण गति को सकारात्मकता का प्रतीक माना गया है इसीलिए 14-15 जनवरी मकर संक्रान्ति से अच्छे दिनों की शुरुआत होती है। इस दिन से शुभ कार्य प्रारम्भ हो जाते हैं।

मकर संक्रान्ति से सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध की ओर आना प्रारम्भ करता है। ऐसा मान कर सम्पूर्ण भारतवर्ष में इस दिन सूर्य उपासना, सूर्य आराधना एवं सूर्य पूजन करके सूर्य देवता के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की जाती है और जप, तप, दान पुण्य, स्नान, श्राद्ध तर्पण इत्यादि धार्मिक कार्य एवं विवाह आदि शुभ कार्य प्रारम्भ होते हैं। ऐसा माना जाता है कि इस दिन किया गया दान सौ गुना बढ़कर शुभ फल देता है। शास्त्रों में कहा गया है कि इस दिन कम्बल और शुद्ध घी का दान करने वाला व्यक्ति मोक्ष को प्राप्त करता है।

माघ मासे महादेवः यो दास्यति घृतकम्बलम्।
स भुक्त्वा सकलान भोगान अन्ते मोक्षं प्राप्यति।।

इस अवसर पर गंगा स्नान एवं दान को अत्यन्त शुभ माना गया है। इस पर्व पर तीर्थराज प्रयाग एवं गंगासागर में स्नान को महास्नान की संज्ञा दी गई है। सामान्यतः सूर्य सभी राशियों को प्रभावित करता है, परन्तु कर्क एवं मकर राशि में सूर्य का प्रवेश धार्मिक दृष्टि से अत्यन्त फलदायक माना गया है। महाभारत काल में भीष्म पितामह ने भी अपनी देह त्यागने के लिए मकर संक्रान्ति के दिन का ही चयन किया था।

भारतवर्ष में यह पर्व दान पुण्य के साथ सौभाग्य वृद्धि के रूप में भी स्वीकारा जाता है। राजस्थान में इस पर्व पर सुहागिन महिलाएँ अपनी सास को सुहाग सामग्री देती हैं और बड़े बुजुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त करती हैं। चौदह की संख्या में सुहागिन महिलाओं को सौभाग्यसूचक वस्तुओं यथा महिलाओं के वस्त्र, चूड़ियां, बिन्दी, नाक का कांटा आदि का पूजन एवं संकल्प कर तिल के लड्डू या तिल से बनी सामग्री पैसे के साथ दान करती हैं। महिलाएं सुहाग सामग्री के साथ ही चौदह की संख्या में बच्चों को उनकी उम्र के हिसाब से खेलने योग्य सामग्री गेंद आदि का भी दान करती हैं। ऐसा संतान प्राप्ति या संतान की रक्षा की भावना से किया जाता है।

इस दिन राजस्थान के मेवाड़ भू-भाग में गेंद से खेलने की परम्परा है, जिसमें बड़े और बूढ़े व्यक्ति भी बच्चों के साथ या अपने साथियों के साथ गेंद से सितोलिया या मारदड़ी खेलते हैं। पूर्वकाल में मेवाड़ भू-भाग में मारदड़ी का खेल बहुत प्रचलित था। विभिन्न समाजों के लोग अपने अपने समाज में एकत्रित हो कपड़े की बनी गेंद से मारदड़ी खेलते थे। उत्साही युवक और प्रौढ़ अपने हाथ से कपड़े की दड़ियां (गेंदे) बनाकर लाते थे और उनसे खेलते थे। गावों में कपड़े की बड़ी गेंद बनाकर लकड़ी के गेड़िये (हॉकी के समान नीचे से मुड़े डंडे) से गेंद को ठोक-ठोककर इधर-उधर धकेलते थे। आजकल क्रिकेट खेल का काफी प्रचलन चल पड़ा है।

आदिवासी अंचल मेवाड़ कांठल, मालवा एवं गुजरात के ग्राम्यांचलों में मकर संक्रान्ति के दिन जनजाति समुदाय में दिवी चिड़िया (इण्डियन रोबिन) को पकड़कर घी, तिल एवं खिचड़ा खिलाकर छोड़ने एवं उसके बैठने के स्थान के आधार पर शगुन देखकर आगामी वर्ष का भविष्य एवं मौसम का पूर्वानुमान जानने की सदियों से चली आ रही परम्परा आज भी कायम है। मेवाड़, वागड़, एवं गुजरात के जनजाति बहुल सरहदी क्षेत्र में मकर संक्रान्ति के दिन प्रातःकाल सूर्योदय के साथ ही गांवों एवं पालों में आदिवासी समाज के बालक बालिकाओं एवं युवाओं की टोलियां 'दिवी होड़ हा-दिवी होड़ हा..' की आवाज के साथ दिवी चिड़िया को पकड़ने के लिए निकल पड़ते हैं तथा इस चिड़िया को जो सामान्यतया लम्बी व बहुत ऊँची उड़ान नहीं भरती है को दौड़ा-दौड़ा कर पकड़ते हैं।

इसके बाद उसे नहलाकर व घी से चमकाकर घर-घर लेकर घूमते हैं। इसे हर घर पर घी पिलाया जाता है, तिल खिलाया जाता है। इस दौरान बाल टोली को उपहार स्वरूप अनाज व नकद इनाम मिलता है। गांव के फले या मोहल्ले के हर घर में घूमने के बाद गांव के गमेती, मुखिया, परिवार के बुजुर्ग या किसी खास मोतबीर के हाथों उसे छोड़ा जाता है। चिड़िया उड़कर जिस स्थान पर बैठती है, उसके आधार पर आगामी वर्ष का भविष्यफल देखा जाता है। चिड़िया किसी हरे-भरे पेड़ पर बैठती है तो बारिश, अच्छी खेती होना एवं लोक स्वास्थ्य अच्छा रहने का संकेत माना जाता है। चिड़िया के सुखे पेड़, चट्टान एवं दरारों पर बैठने पर वर्ष खराब रहने, सुखा तथा महामारी के प्रकोप का संकेत समझा जाता है। मकान आदि पर बैठने पर वर्ष के सामान्य होने का अनुमान लगाया जाता है।

दिवी चिडिया-इण्डियन रोबिन (सेक्सी कोलोइडस फ्युलीकाटा) रोबिन पक्षियों के सबसे बडे कूल 'म्यूसिकोपिडी' का सदस्य है। इसे हिन्दी में कलचुरी, दामा, कालचिड़ी, गुजराती में देवली, काली दिवा तथा वागड़ी में दिवी, देवी या डसकी आदि नामों से जाना जाता है। देवी चिड़िया से शगुन देखने की सदियों से चली आ रही यह परम्परा मानव और पशु-पक्षियों के प्रेम और सम्बंधों को तो प्रदर्शित करती ही है साथ ही इनके संरक्षण का भी बोध कराती है।

हरियाणा और पंजाब में मकर संक्रान्ति के एक दिन पूर्व लोहड़ी पर्व मनाया है। लोहड़ी को अंधेरा होते ही मोहल्ले के सभी लोग एकत्रित होकर एक स्थान पर आग जलाकर अग्नि का पूजन करते हैं और तिलचौली की आहुति देते हैं। तिलचौली तिल, गुड़, चावल और भूने हुए मक्के से बनी होती है। लोग तिल से बनी हुई गजक और रेवड़ियाँ आपस में बाटते हैं और खुशियाँ मनाते हैं। बहुएं घर-घर जाकर लोकगीत गाकर लोहड़ी मांगती हैं। नई बहू और नवजात बच्चों के लिए लोहड़ी का विशेष महत्त्व होता है। इसके साथ पारम्परिक मक्के की रोटी और सरसों के साग का भी लुत्फ उठाया जाता है।

तमिलनाडु में इसे पोंगल के रूप में मनाते हैं। वहां पोंगल चार दिन तक मनाते हैं। प्रथम दिन भोगी-पोंगल, द्वितीय दिन सूर्य-पोंगल, तृतीय दिन मट्टू-पोंगल और चौथे दिन कन्या-पोंगल मनाते हैं। पहले दिन कूड़ा करकट इकट्ठा कर जलाया जाता है। दूसरे दिन लक्ष्मीजी की पूजा की जाती है। तीसरे दिन पशु धन की पूजा की जाती है। पोंगल मनाने के लिए स्नान करके खुले आंगन में मिट्टी के बर्तन में खीर बनायी जाती है, जिसे पोंगल कहते हैं। इसके बाद सूर्य देवता को नैवैद्य चढ़ाया जाता है। उसके बाद खीर को प्रसाद के रूप में सभी ग्रहण करते हैं। इस दिन बेटी और जमाई राजा का विशेष रूप से स्वागत किया जाता है।

महाराष्ट्र में इस दिन सभी विवाहित महिलाएं अपने विवाह के बाद आने वाली पहली संक्रान्ति पर कपास, तेल व नमक आदि चीजें अन्य

सुहागिन महिलाओं को दान करती हैं। तिल-गूल नामक हलवे के बांटने की प्रथा भी है। लोग एक दूसरे को तिल गुड़ देते हैं- 'तिळ गूळ ध्या आणि गोड़ गोड़ बोला' अर्थात तिल गुड़ लो और मीठा-मीठा बोलो। इस दिन महिलाएं आपस में तिल, गुड़, रोली और हल्दी बांटती हैं।

बंगाल में इस पर्व पर स्नान के पश्चात तिल दान करने की प्रथा है। यहां गंगासागर में प्रति वर्ष विशाल मेला लगता है। गंगासागर में स्नान-दान के लिए लाखों की भीड़ लगती है। लोग कष्ट उठाकर गंगासागर की यात्रा करते हैं। वर्ष में केवल इस दिन यहां लोगों की अपार भीड़ होती है इसीलिए कहा जाता है- 'सारे तीरथ बार-बार गंगा सागर एक बार।'

उत्तरप्रदेश में यह मुख्य रूप से दान का पर्व स्वीकारा जाता है। इलाहाबाद में यह पर्व माघ मेले के नाम से जाना जाता है। 14 जनवरी से इलाहाबाद में हर साल माघ मेले की शुरुआत होती है। इलाहाबाद में गंगा, यमुना व सरस्वती के संगम पर प्रत्येक वर्ष एक माह तक माघ मेला लगता है।

माघ मेले का पहला स्नान मकर संक्रान्ति से शुरु होकर शिवरात्रि के आखिरी स्नान तक चलता है। संक्रान्ति के दिन स्नान के बाद दान देने की भी परम्परा उत्तरप्रदेश है। इस दिन उत्तरप्रदेश के बागेश्वर में बड़ा मेला होता है। गंगा स्नान करके तिल के मिष्ठान्न आदि को ब्राह्मणों व पूज्य व्यक्तियों को दान दिया जाता है। गंगा स्नान रामेश्वर, चित्रशिला व अन्य स्थानों पर भी होते हैं। इस पर्व पर गंगा एवं राम गंगा घाटों पर बड़े-बड़े मेले लगते हैं। समूचे उत्तरप्रदेश में इस व्रत को खिचड़ी के नाम से जाना जाता है तथा इस दिन खिचड़ी खाने एवं खिचड़ी दान देने का अत्यधिक महत्त्व स्वीकार जाता है। असम में मकर संकान्ति को माघ-बिहू अथवा भोगली-बिहू के नाम से मनाते हैं।

संक्रान्ति पर भारतवर्ष के कई भू-भागों में खासकर गुजरात, मुम्बई और जयपुर में पतंग उड़ानें की प्रथा है और कहा जाता है कि जितनी उपर पतंग जाएगी उतनी ही समृद्धि बढ़ती जाएगी। वस्तुतः मकर संक्रान्ति भारत की एक विशिष्ट सूर्योपासना और दान पुण्य के साथ ऊर्जा, सौभाग्य एवं समृद्धि की वृद्धि की भावना वाला अनोखा पर्व है इसीलिए सम्पूर्ण भारत में इसे बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है।

मकर संक्रान्ति से सूर्य की गति उत्तरी गोलार्द्ध की ओर प्रारम्भ हो जाती है। अतः इस दिन से दिन बड़े और रातें छोटी होने लगती हैं और गर्मी का मौसम प्रारम्भ हो जाता है। दिन बड़े होने से सूर्य का प्रकाश बढ़ने लगता है और अंधकार कम होने लगता है, जिससे प्राणियों में चेतनता और कार्यशक्ति में वृद्धि होती है। मानव शरीर में ऊर्जा का संचार अधिक होने से व्यक्ति की कार्य क्षमता में वृद्धि होती है और नकारात्मकता का नाश होने लगता है। व्यक्ति अपने सकारात्मक पक्ष के साथ प्रगति की ओर अग्रसर होने लगता है। यह सन्देश भी देता है कि अब ग्रीष्म ऋतु प्रारम्भ हो रही है तो गर्म तासीर की वस्तुओं का उपभोग कम करना है और जितना हो सके गर्म तासीर की वस्तुओं को दान कर देना चाहिए, जिससे उनका उपभोग नहीं होगा।

तिलवत् स्निग्धं मनोऽस्तु वाण्यां गुडवन्माधुर्यम।
तिलगुडलड्डुकवत् सम्बन्धेऽस्तु सुवृत्तत्त्वम्।।
मकरसंक्रान्तिपर्वणः सर्वेभ्यः शुभाषयाः।

वे नित्य नया भजन लिखते थे

- पं. नंदकिशोर 'निर्झर'-

पं. भैरव शंकर शर्मा

यह वह समय था जब दूरदर्शन तथा मोबाईल नहीं आए थे। उस समय मनोरंजन के साधन नहीं के बराबर थे। गांवों में रामलीलाएं, रासलीलाएं, लोककलाकार, भवई, कथावाचक मेलों-ठेलों के माध्यम से धार्मिक वातावरण भी सृजित होता था तथा स्वच्छ मनोरंजन भी। रस्सी पर चलते नट और डमरू बजाकर जादू दिखाते जादूगर, बन्दर-रीछ के करतब आम थे। सत्यनारायण व्रत कथा, शनि व्रत कथा गांवों में खूब प्रचलित थी। मेवाड़ में अनेक कथावाचक गद्य-पद्य शैली में गा-गाकर कथावाचन किया करते थे। इन्हीं दिनों इस क्षेत्र में जिन्होंने कला और प्रतिभा का परिचय देकर अचंभित कर दिया, उनका नाम था पं. भैरवशंकर शर्मा। सरस्वती ने उन्हें मधुर कण्ठ तथा असीम शक्ति दी थी। वे कुशल वादक, भजन लेखक व मीठे गायक थे। हारमोनियम, ढोलक और मजीरे ये तीनों लोक वाद्य उनकी सतसंग में प्रमुख थे। वे विशुद्ध लोकभाषा मेवाड़ी में कथावाचन किया करते थे। उनकी कथा सुनने आसपास के दसों गांव के भक्त-श्रोता रातभर कथा का आनन्द लेते थे। वे लोक कवि थे। मक्खी, मच्छर, केलड़ी जैसे सामान्य विषयों पर भी भजन लिखकर उन्होंने श्रोताओं को खूब हंसाया। उन्होंने तत्कालीन स्थानीय तथा राष्ट्रीय नेताओं पर भी भजन लिखे। उदाहरणार्थ- नंदवाणो नंबर लेग्यो रे..... (भवानीशंकर जी नंदवाना), मोतीलाला जी रा कंवरा..... (नेहरू), चमक सितारा अस्त हो गया..... (शास्त्री) उन्होंने सगुण और निर्गुण दोनों पर लिखा। उन्होंने कबीर के भजन- 'चेला वही चीज लाना जो गुरु ने मंगाई' का उत्तर अपने भजन-'चेला वही चीज लाया जो गुरु ने मंगाई' से दिया। सम्भालो संता जूना-जूगादी ठाणा। मारा सतगुरु सेण बताई रे, मैं अमर ओढ़णी पाई जैसे निर्गुणी अमर भजन लिखे। उनकी कथा के माध्यम से उन्होंने समाज सुधार का महनीय कार्य किया। उस समय प्रचलित मृत्यु भोज, बाल विवाह, कन्या विक्रय, नशा खोरी आदि पर अपनी रचनाओं के माध्यम से गहरी चोट की। कतिपय उदाहरण दृष्टव्य है-

पं. नंदकिशोर 'निर्झर'

- दारू मत पीवो देश में यो नीत बगाड़े।
- थने जरा शरम नी आई रे थे बेची बाप कसाई।
- बावळी आपां मरग्या ए, करियावर रे कारणे घर-गुवाड़ी बकग्या ए।।

उनका नाम कहत कबीर सुणो भाई साधो, मीरां के प्रभु गिरधर नागर की भांति नाम भेरियो गाम नेवर्‌यो पहचान बन गया। उन्होंने अकूत लिखा। भैरव भाव भजन माला के सत्ताईस अंकों में उनके लिखे हजारों भजन संग्रहीत हैं। इसके अलावा भी सत्यव्रत कथा, शनि व्रत कथा, दुर्गा सरतशती, गीता, रामायण तथा महाभारत के अनेक प्रसंगों पर भी उनकी कलम चली। तेजाजी, कल्लाजी, देवनारायणजी और रामदेवजी पर लोक भाषा में लोकधुनों पर लिखकर उन्होंने इन लोक देवताओं को अमर कर दिया। प्रचीन साहित्य की विलुप्त होती विधाओं यथा- आरती, पच्चीसी, चालीसा तथा बावनी को उन्होंने पुनर्जीवित किया। भजनों में प्रचलित अनेक राग-रागनियों (लावणी, सोरठ, परभाती) का प्रयोग उनके भजनों में मिलता है। भजनों के द्वारा ही उन्होंने जीवन में अपार यश व प्रसिद्धि प्राप्त की। अनेक अवसरों पर उन्हें इनाम-इकरार देकर सम्मानित किया गया। एक बार महाराणा भूपालसिंहजी ने उन्हें सुनकर सराहा तथा अपने कर कमलों से पुरस्कृत किया। इनका जन्म चितौड़गढ़ जिले के छोटे से गांव नेवरिया में एक सामान्य परिवार में हुआ था। गंगरार अपने बहनोईजी के पास रहकर उन्होंने भाषा, ज्योतिष व संगीत का ज्ञान प्राप्त किया। एक जगह वे अपनी मां के प्रति लिखते हैं-

खेड़ी न्यास घराणे जन्मी, कंवरा नाम धराणो।
पालपोस 'भेर्‌या' ने भगवती अनुभव पाठ पढ़ाणो।।

उन्होंने सामान्य -

मोटी बाजे छूला की केलड़ी
वा-वा ऐ मारी माखी, उदालो मं पतो न लाग्यो।
करबा आगी राखी।।

के साथ असामान्य-

ममता मार्‌यां मोक्ष हुवैलो, मर्‌यां पेली मरजाणा।
ऐ 'भैरव' मुगती का मारग, पावे पद निरवाणा।।

आज भी गुरु पूर्णिमा पर उनके हजारों स्नेही शिष्यगण उन्हें भावपूर्ण भजनों द्वारा श्रद्धांजलि देते हैं। एक शिष्य ने लिखा- वे चल्या गया रै भैरव गुर्जर गौड़। वे महान कवि और कलाकार थे। लेखक को भी उनके सान्निध्य का खूब अवसर मिला। एक भक्त कवि की सब विशेषताएं उनमें भरी थीं। उनके एक प्रसिद्ध भजन की पंक्तियां इस प्रकार हैं-

'कंचन वाली काया ए, सैलाणी मं तो पावणां।
एक दन जावां ला, फेरे नहीं आवांला।।'

समाचार / विचार

फ्लिपकार्ट ने महाकुंभ में किया 'एक जिला, एक उत्पाद' (ओडीओपी) विभाग से गठजोड़

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के घरेलू ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस फ्लिपकार्ट ने महाकुंभ मेला 2025 में राज्य की सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए उत्तरप्रदेश सरकार के 'एक जिला, एक उत्पाद' (ओडीओपी) विभाग से गठजोड़ किया है। प्रयागराज, उत्तरप्रदेश में 13 जनवरी से 26 फरवरी तक हो रहा महाकुंभ मेला 2025 दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक आयोजन है। महाकुंभ मेले में फ्लिपकार्ट समर्पित बूथ एवं स्टॉल्स के माध्यम से अन्य सांस्कृतिक प्रयासों के साथ-साथ ओडीओपी पहल को प्रदर्शित कर रही है। आयुक्त एवं निदेशक, उद्योग निदेशालय, कानपुर, उत्तरप्रदेश के. विजयेंद्र पांडियन (आईएएस) ने कहा कि उत्तरप्रदेश सरकार की ओडीओपी पहल स्थानीय शिल्प को बढ़ावा देने और सतत आजीविका सृजित करने की हमारी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। ओडीओपी पहल के साथ फ्लिपकार्ट की साझेदारी कारीगरों एवं उद्यमियों को उनके अनूठे उत्पाद राष्ट्रीय स्तर पर ग्राहकों तक पहुंचाने के लिए मजबूत डिजिटल प्लेटफॉर्म प्रदान करने के हमारे लक्ष्य को गति देने वाली है। यह साझेदारी आर्थिक विकास एवं इनोवेशन को गति देने के साथ सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने की उत्तरप्रदेश सरकार की प्रतिबद्धता को भी दिखाती है। हमारा लक्ष्य स्थानीय समुदायों को सशक्त करना, उन्हें आज के डायनामिक मार्केटप्लेस में आगे बढ़ने में समक्ष बनाना और राज्य के विकास में सार्थक योगदान देना है। फ्लिपकार्ट ग्रुप के चीफ कॉरपोरेट अफेयर्स ऑफिसर रजनीश कुमार ने कहा कि हमारे ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस प्लेटफॉर्म पर उत्तरप्रदेश सरकार के ओडीओपी प्रोडक्ट्स में 60 प्रतिशत से ज्यादा की वृद्धि के साथ वंचित समुदायों को सशक्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महाकुंभ वंचित समुदायों के लिए आर्थिक विकास के साथ अनूठे उत्पादों को देश-दुनिया के ग्राहकों के समक्ष प्रस्तुत करने का अनूठा प्लेटफॉर्म है। हम स्थानीय प्रतिभाओं को सशक्त करने और सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करने की दिशा में ओडीओपी जैसी पहल को आगे बढ़ाने के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के साथ सहयोग के लिए आभारी हैं।

ग्रॉसरी, दैनिक जरूरत, त्योहारी उत्पादों पर एक लाख रुपये से ज्यादा खर्च किए

उदयपुर (ह. सं.)। 'हाउ इंडिया स्विगीड 2024' की सालाना रिपोर्ट में सामने आया है कि किस तरह से शहर के लोगों ने स्विगी इंस्टामार्ट की सहूलियत को अपनाया है। ताजा दूध से लेकर त्योहारी जरूरत के उत्पादों तक उदयपुर के लोगों ने ऑन-डिमांड डिलीवरी की सहूलियत को अपनाया, जिससे परंपरा और आधुनिक सुविधाओं के बीच अनूठा मेल देखने को मिला।

स्विगी इंस्टामार्ट के सीईओ अमितेश झा ने कहा कि उदयपुर में लॉन्चिंग के बाद से यह देखना शानदार अनुभव रहा है कि कैसे यहां के यूजर्स तेजी से क्विक कॉमर्स की सुविधाओं को अपना रहे हैं। बात चाहे ताजे दूध से दिन की शुरुआत करने की हो, किसी खास मौके पर त्योहारी जरूरत के उत्पादों कीया फिर इलेक्ट्रॉनिक्स से जुड़ी किसी जरूरत की, शहर के लोगों ने क्विक कॉमर्स को अपनी जिंदगी का हिस्सा बना लिया है। इस साल उदयपुर के एक यूजर ने 1,16,317 रुपये खर्च किए, जो स्विगी इंस्टामार्ट पर लोगों के भरोसे को दिखाता है। हमें उदयपुर के इस सफर का हिस्सा बननेऔर लोगों को उनकी जरूरत की वस्तुएं तुरंत उपलब्ध कराने का गर्व है।

टॉपिकल फेको विधि से मोतियाबिंद के सफल ऑपरेशन

उदयपुर (ह. सं.)। पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज, पिम्स हॉस्पिटल, उमरड़ा में चिकित्सकों ने सफेद मोतियाबिंद के टॉपिकल फेको विधि से सफल ऑपरेशन किये।

पिम्स हॉस्पिटल के चेयरमेन आशीष अग्रवाल ने बताया कि गत दिनों सिरोही में पिम्स हॉस्पिटल द्वारा आई कैंप आयोजित किया गया जिसमें बहुत से मरीजों में मोतियाबिंद पाया गया। इन मरीजों को उमरड़ा स्थित पिम्स हॉस्पिटल में लाया गया और उनके निशुल्क सफेद मोतियाबिंद के टॉपिकल फेको विधि से सफल ऑपरेशन किये गए। ऑपरेशन नेत्र रोग विभाग के प्रमुख डॉ. नितिन सिंह, डॉ. संध्या नागदा और उनकी टीम डॉ. प्रांशु पटेल, ओम प्रकाश, निर्मला, शिव और आनंद ने किये।

एचडीएफसी बैंक 40 उत्पाद और सेवाएं प्रदान करेगा

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक ने घोषणा की कि वह राजस्थान सरकार के ईमित्र प्लेटफॉर्म के माध्यम से अपने उत्पादों और सेवाओं की विस्तृत श्रृंखला की पेशकश करेगा। राजस्थान सरकार की पूर्ण स्वामित्व वाली कम्पनी राजकॉम्प इंफो सर्विसेज लि. (आरआईएसएल) के साथ साझेदारी में, बैंक का लक्ष्य राज्य के कम और बिना बैंकिंग वाले क्षेत्रों में पकड़ बनाने के लिए ई-मित्र एजेंट नेटवर्क का लाभ उठाना है। आरआईएसएल और एचडीएफसी बैंक के बीच हुए समझौते के तहत, बैंक के स्मार्ट साथी डिजिटल वितरण प्लेटफॉर्म को ई-मित्र ऐप के साथ शामिल किया जाएगा, जिससे राजस्थान के लोग बैंक के 40 से अधिक उत्पादों और सेवाओं जैसे खाते, ऋण, जमा और भुगतान उत्पादों आदि की सेवाएं डिजिटल रूप से प्राप्त कर सकेंगे। ईमित्र का 78,000 मजबूत एजेन्ट नेटवर्क राज्य के निवासियों को बैंक के उत्पाद और सेवाओं तक पहुंचने के लिए मार्गदर्शन करने के लिए उपलब्ध होगा। इसके अतिरिक्त, बैंक आरआईएसएल के ईमित्र एजेंटों को अपने उत्पादों और सेवाओं के बारे में जानकारी देने के लिए प्रशिक्षित करेगा।

एचडीएफसी बैंक के कंट्री हेड (पेमेंन्ट, लायबिलिटी प्रोडेक्ट, कंज्यूमर फायनेंस) पराग राव ने कहा कि हमें राजस्थान सरकार के साथ साझेदारी करके खुशी हो रही है, जिससे राज्य के निवासियों को ईमित्र के विशाल नेटवर्क के माध्यम से डिजिटल रूप से हमारे उत्पादों और सेवाओं तक पहुंच मिल सके। ईमित्र प्लेटफॉर्म स्थानीय उपभोक्ताओं की सभी वित्तीय और गैर-वित्तीय जरूरतों के लिए वन स्टॉप् पॉइंट है।'' उन्होंने यह भी बताया कि इस साझेदारी से राजस्थान के लोगों को बैंक के उत्पादों और सेवाओं की विस्तृत श्रृंखला तक सुविधाजनक स्थान पर पहंच प्राप्त होगी।

नए ओलंपिक संघ को मान्यता देना खिलाड़ियों के हितों के विपरीत

उदयपुर (ह. सं.)। आज हम एक ऐसे अहम मुद्दे पर बात करना चाहते हैं जिससे खिलाड़ियों के हितों का नुकसान हो रहा है। विवाद तो उपर के स्तर पर होता है लेकिन उसका खामियाजा लगातार मेहनत कर रहे खिलाड़ियों को होता है। यह बात उदयपुर पूर्व राजस्थान बेडमिंटन के अध्यक्ष एवं ओलंपिक एसोसिएशन के अध्यक्ष सुधीर बक्शी ने प्रेसवार्ता में कही। इस अवसर पर सेक्रेटरी हेमराज सोनवाल, कोषाध्यक्ष आर. के धाभाई भी उपस्थित थे।

सुधीर बक्षी ने बताया कि स्व. जनार्दनसिंहजी गहलोत के स्वर्गवास के बाद यह स्थिति पैदा हुई जिसमें राजस्थान ओलिंपिक एसोसिएशन में एक नई एसोसिएशन बना दी गई। उसी दौर में गहलोतजी के साथ जो पिछले 20 से 30 वर्षों से साथ थे, उन लोगों ने काफी समझाने की कोशिश की लेकिन कुछ लोग नहीं माने और उन लोगों ने दूसरी नई एसोसिएशन बना ली। इंडियन ओलंपिक एसोसिएशन ने प्रमाण पत्र दिया जिसका तात्पर्य यह रहा कि आप ही राजस्थान में ओलंपिक एसोसिएशन के कार्य को देखते हुए उनका प्रतिनिधित्व करेंगे। इसके पक्ष में राम अवतार जाखड़, अनिल व्यास ने भारतीय ओलंपिक संघ के पर्यवेक्षक के रूप में पूर्ण कानूनी तरीके से चुनाव करवाया जिसकी एफआईआर मान्यता भारतीय ओलंपिक संघ ने प्रदान की। भारतीय ओलंपिक संघ की वेबसाइट पर नाम दर्ज किया कि राजस्थान ओलंपिक एसोसिएशन के जाखड़ सचिव हैं और अनिल व्यास अध्यक्ष हैं।

हेमराज सोनवाल ने बताया कि खेलो इंडिया में और नेशनल गेम्स की टीम में रामअवतार और अनिल व्यास की ओलंपिक एसोसिएशन की बनाई टीम खेली थी व उसमें भी कोई भेदभाव नहीं किया गया। सभी को शामिल करते हुए टीमों को भेजा गया था लेकिन कुछ दिन पहले इंडियन ओलंपिक एसोसिएशन ने फिर एक बार अनिल व्यास वाली ओलंपिक संघ एसोसिएशन की बजाए अध्यक्ष तेजस्वीसिंह गहलोत और महासचिव सुरेंद्रसिंह गुर्जर वाली एसोसिएशन को मान्यता दे दी व वेबसाइट पर अनिल व्यास और रामअवतार जाखड़ की जगह उनका नाम दर्ज कर दिया गया। जिस एसोसिएशन का विधिवत खुद इंडियन ओलंपिक एसोसिएशन ने चुनाव कराया उसी की वैधानिक खत्म करते हुए दूसरे गुट को अधिकार देना खेलों के सितारे गर्दिश में लाना और खेलों में एक डर भावना पैदा करने जैसा कदम है। यह समझ से परे है। हमारा अपना मनाना है कि अगर भारतीय ओलिंपिक एसोसिएशन एक साथ मिलकर अच्छा प्रदर्शन करे, आपसी सामंजस्य से काम करे व खेलों को प्राथमिकता में सर्वोपरि रखें तो उचित होगा। ओलंपिक संघ अगर दोनों संघों में समझौता कराते हुए साझा प्रयासों के साथ काम करे तो वह ज्यादा बेहतर होगा।

आर. के धाभाई ने बताया कि जो कुछ अभी घटित हुआ है यह भी कानून के विरूद्ध है क्योंकि जो दूसरे गुट के हैं वे अध्यक्ष पद पर आसीन हुए तो हैं लेकिन वे किसी भी खेल संघ के पद पर नहीं हैं जो न्यूनतम एक अर्हता है। दोनों संघों को एक साथ बिठाकर भारतीय ओलंपिक संघ को खेलहित में मध्यस्थता करते हुए कोई एक रास्ता अवश्य निकालना चाहिए।

एसीपीआई द्वारा आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न

एसीपीआई लाएगा मरीन कम्पोस्टिंग तकनीक, समुद्र, नदियों और तालाबों को कचरे से मिलेगी मुक्ति

उदयपुर (डॉ. तुक्तक भानावत)। एसीपीआई सदस्यों द्वारा सेंट्रल पोल्यूशन कंट्रोल बोर्ड द्वारा स्टेण्डर्ड 17088 के तहत् कम्पोस्टेबल प्रोडक्ट्स के निर्माण की प्रतिबद्धता की शपथ के साथ भारत में कम्पोस्टेबल प्रोडक्ट्स की सबसे बड़ी संस्था एसोसिएशन ऑफ कम्पोस्टेबल प्रोडक्ट्स इन इंडिया (एसीपीआई) द्वारा उदयपुर में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन में देश-विदेश के विशेषज्ञों एवं सदस्यों ने कम्पोस्टेबल प्रोडक्ट्स को गुणवत्तापूर्ण और स्टेण्डर्ड को सुनिश्चित करने के लिये टीम के गठन करने का निर्णय लिया। यह टीम क्वालिटी और स्टेण्डर्ड की निगरानी करेगी एवं इसी अनुसार प्रोडक्ट्स हो यह तय करेगी। अगले एक वर्ष में मरीन कम्पोस्टिंग प्रोडक्ट्स की तकनीक लाने की योजना की जानकारी दी गयी जिससे समुद्र, झीलों, तालाबों या नालों में कचरे की समस्या से निजात मिलेगी।

एसीपीआई के प्रेसिडेंट मयूर जैन ने बताया कि मरीन कम्पोस्टिंग प्रोडक्ट्स की तकनीक पर कार्य किया जा रहा है जो कि देश में पानी में कचरे की समस्या से निपटने में महत्वपूर्ण होगी। मरीन कम्पोस्ट पानी में ही घुल कर कचरे की समस्या को दूर करेगा जो कि आज एक बहुत बड़ी समस्या है।

एसीपीआई के प्रमुख सदस्य अशोक बोहरा ने बताया कि दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन में क्वालिटी प्रोडक्ट्स को सुनिश्चित करने और कमेटी के गठन के साथ ही सीपीसीबी से मान्यता प्राप्त कम्पोस्टेबल प्लास्टिक प्रोडक्ट्स के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गयी। इसमें कम्पोस्टेबल प्रोडक्ट्स की पहचान के लिये अलग कलर और कोडिंग का प्रावधान सरकार को भेजने का निर्णय लिया गया। इससे प्लास्टिक से निर्मित उत्पादों और कम्पोस्टेबल प्लास्टिक प्रोडक्ट्स की अलग पहचान हो सकेगी

मुख्य अतिथि स्वच्छ भारत मिशन में राजस्थान के एंबेसेडर एवं डूंगरपुर नगरपालिका के पूर्व सभापति के.के. गुप्ता ने कहा कि एसीपीआई के सहयोग से राजस्थान को प्लास्टिक मुक्त बनाने में महत्वपूर्ण उपलकब्ध मिल सकेगी।

सम्मेलन में अलग अलग प्रजेन्टेशन के माध्यम से कम्पोसटेबल प्रोडक्ट्स के टेस्टिंग प्रोटोकॉल्स, प्लास्टिक हर्डल्स एण्ड सोल्यूशन्स, कम्पोस्टेबल ओनली अण्डर इण्डस्ट्रियल कम्पोस्टिंग, कम्पोस्टिंग लेबलिंग, कम्पोस्टेबल कम्प्लाइंग आईएस- आईएसओ 17088 टेस्टेड बाय सीआईपीईटी एण्ड सर्टिफाइड बाय सीपीसीबी, कलर कोडिंग, विभिन्न नियमों एवं कम्पोस्टेबल प्रोडक्ट्स की उपयोगिता और इससे पर्यावरण को होने वाले लाभ की जानकारी दी गयी।

दक्षिण भारत के जायके से भरा दक्षिण डिलाइट फेस्टिवेल

उदयपुर (डॉ. तुक्तक भानावत)। उदयपुर में पद्मिनी बाग रिजोर्ट और स्पा देबारी उदयपुर की और से इन्वेट्री होटल्स और इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट (आईआईएचएम) के सहयोग से दक्षिण डिलाइट फेस्टिवेल आयोजित हुआ। फेस्टिवल के अतिथि टूरिज्म डिपार्टमेंट की डिप्टी डायरेक्टर शिखा सक्सेना और डॉ. आनंद गुप्ता थे। इस मौके पर एडीएम प्रशासन दीपेंद्रसिंह राठौड़, नगर निगम के चीफ फायर ऑफिसर बाबूलाल चौधरी, होटल एसोसिएशन के अध्यक्ष सुदर्शनसिंह कारोही, पूर्व अध्यक्ष भगवान वैष्णव, धीरज दोषी आदि मौजूद थे। पद्मिनी बाग के निदेशक पृथ्वीराजसिंह चौहान और इन्वेट्री होटल्स के सुदिप्तो देव स्वागत किया।

पर्यटन विभाग की उप निदेशक शिखा सक्सेना ने कहा कि हम नए-नए इवेंट लेकर आएंगे तो उदयपुर में टूरिज्म चरम पर रहेगा। ऑफ सीजन होगा तब भी टूरिस्ट उदयपुर से कनेक्ट रहेगा। सक्सेना ने कहा कि यह यूनिक कार्यक्रम है। ऐसे आयोजनों से दक्षिण उदयपुर से जुड़ेगा। इस तरह के आयोजन एक तरह से सांस्कृतिक परम्पराओं को एक्सचेंज करते हैं। आने वाले समय में हम ऐसे प्लान करेंगे कि टूरिज्म विभाग भी ऐसे कार्यक्रम को प्रमोट करने में कोई कमी नहीं छोड़ेगा।

डॉ. आनंद गुप्ता ने कहा कि ऐसे प्रयास का स्वागत है और इसका सीधा फायदा हमारे शहर को होगा। हमारे शहर के लोग भी यहां आए तो उनको भी लगेगा कि यह बड़ा कार्यक्रम है। यहां आने वाला बहुत कुछ लेकर ही जाएंगा।

पृथ्वीराज सिंह चौहान ने बताया कि फेस्टिवल में साउथ इंडियन फूड की कई वेरायटियों का आगन्तुकों ने स्वाद लिया जिसमें शाकाहारी डिश की ढेरों श्रृंखला उपलब्ध थी। सुदिप्तो देव और सुमन मेहती ने बताया कि इस फेस्टिवल में दक्षिण के तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना के फूड काउंटर थे। इन राज्यों की कई खास डिशेज भी यहां बनाई गई और उसका स्वाद मेवाड़ के लोगों और यहां आने वाले मेहमानों ने लिया।

फेस्टिवल में तमिलनाडु की मसालेदार चेट्टीनाड करी से लेकर केरल के समृद्ध, नारियल-युक्त स्वाद, कर्नाटक की सुगंधित बिरयानी और आंध्रप्रदेश के तीखे स्वाद तक के प्रामाणिक व्यंजनों को मेहमानों ने बहुत पसंद किया। इसके अलावा, 'दक्षिणी डिलाइट्स' में सांस्कृतिक प्रदर्शन दक्षिण भारत के पारंपरिक संगीत, नृत्य और कलात्मकता को उजागर करते मृदंगम की लयबद्ध ताल, भरतनाट्यम नर्तकियों की सुंदर हरकतों और कर्नाटक संगीत की धुनों से मेहमान मंत्रमुग्ध हो गए।

जय राजस्थान के 53वें स्थापना दिवस के पर केलेण्डर विमोचन, काव्य गोष्ठी एवं सम्मान समारोह

उदयपुर (ह. सं.)। मेवाड़ सम्भाग के पहले जय राजस्थान दैनिक के 53वें स्थापना दिवस पर पाथेय संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में लघु काव्य गोष्ठी, कैलेण्डर विमोचन एवं सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि प्रधान संपादक

शैलेश व्यास, संस्थान अध्यक्ष डॉ. सीपी अग्रवाल, गजल गायक डॉ. प्रेम भंडारी एवं डॉ. मधु अग्रवाल उपस्थित थे। शैलेश व्यास ने जय राजस्थान के 53 साल की यात्रा के बारे में कहा कि 6 फरवरी 1972 को संस्थापक एवं पिताश्री चन्द्रशेजी व्यास ने मेवाड़ सम्भाग के पहले अखबार के रूप में इसका प्रकाशन शुरू किया। प्रारम्भिक काल में आई चुनौतियों का सामना करते हुए जय राजस्थान मात्र कुछ ही समय दक्षिणी राजस्थान का सबसे लोकप्रिय अखबार बन गया। इस कालखंड में कई लोग जुड़े, जुड़ते गये। यहां पर पत्रकारिता का प्रशिक्षण लेने के बाद वह अन्य संस्थानों में चले गये। यह सिलसिला आज तक जारी है। प्रतिस्पर्धा और मार्केटिंग के इस युग में अब पहले से ज्यादा चुनौतियों और संघर्षों का सामना करना पड़ रहा है।

इस दौरान नववर्ष 2025 के कैलेण्डर का विमोचन किया गया। लघु काव्यगोष्ठी में डॉ. मधु अग्रवाल, चन्द्रेश खत्री, पं. आईना उदयपुरी, शाद उदयपुरी, नितिन मौलिक एवं श्रीमती राबिनी शर्मा ने मुक्तक, गजल, शायरियां एवं कविताएं प्रस्तुत की। समारोह में भूपेन्द्रकुमार चौबीसा, ज्योति व्यास, तृप्ति व्यास, श्रीमती कौशल्या शर्मा, राजेन्द्र हिलोरिया, सुशील जैन, मांगीलाल माली, अब्दुल अजीजी सिन्धी, रवि सिसोदिया, श्रीमती वीरबाला सिसोदिया, मधुश्याम चौबीसा, महेश सुहालका, प्रेम कपूर, मधुसुदन वैष्णव, सनत जोशी, महेश व्यास, विष्णु शर्मा हितैषी, सुरेश लखन, कैलाश रावत, राजीव मूर्डिया, प्रतीक जैन, विनय भाणावत एवं दिलीप कोठारी को उपरना एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया।

महाकुंभ प्रयागराज में नारायण सेवा का दिव्यांग सेवा शिविर शुरू

उदयपुर (ह.सं.)। प्रयागराज महाकुंभ 2025 में नारायण सेवा संस्थान का भव्य दिव्यांगजन सेवा शिविर शुरू हुआ। संस्थान के ट्रस्टी देवेंद्र चौबीसा ने बताया कि

शिवरात्रि तक 45 दिनों तक चलने वाले कुंभ में संस्थान ने 80 हजार वर्गफिट भूखंड पर शिविर आयोजित किया है जिसमें प्रतिदिन भंडारा, दुर्घटना से दिव्यांग हुए लोगों के लिए कृत्रिम अंग कार्यशाला, वस्त्रदान, प्राथमिक चिकित्सा, अग्निशमन और आवास सेवा जैसी कई सेवाएं उपलब्ध करवायी जायेगी।

संस्थान संस्थापक निर्वाणी पीठाधीश्वर आचार्य महामंडलेश्वर कैलाश महाराज की प्रेरणा से संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल की उपस्थिति में हवन आदि कर जगत कल्याण की कामना की गई तथा मानव सेवा का दिव्य सेवा यज्ञ निर्विघ्न पूर्ण होने की राम भगवान से प्रार्थना की गई। इसके बाद निर्वाणी अनी अखाड़ा के श्रीमहंत मुरलीदास महाराज, खाकी अनि अखाड़े के श्रीमहंत मोहनदास महाराज, दिगंबर अनि अखाड़े के श्रीमहंत रामकिशोरदास महाराज, निर्वाणी अनी के मंत्री महंत सत्यदेवदास महाराज, नंदराम महाराज, डॉ. महेशदास, राजेशदास पहलवान, दिगंबर अनि के मंत्री वैष्णवदास महाराज और बलरामदास महाराज सहित सैकड़ों संतों के साथ धर्म ध्वजा पूजन का समारोह सम्पन्न हुआ। इस दौरान पंगत व भंडारा की सेवा भी हुई।

डॉ. कमलेश शर्मा बने अतिरिक्त निदेशक

उदयपुर (सुजस)। राजस्थान सरकार ने एक आदेश जारी कर राजस्थान सूचना एवं जनसंपर्क सेवा के वर्ष 2005 बैच के अधिकारी डॉ. कमलेश शर्मा को अतिरिक्त निदेशक पद पर पदोन्नत किया है। राज्य सरकार के सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग की ओर से जारी आदेश के तहत विभागीय पदोन्नति समिति की अभिशंसा पर डॉ. शर्मा को वर्ष 2024-25 की रिक्ति पर संयुक्त निदेशक से अतिरिक्त निदेशक पद पर पदोन्नत किया गया है। डॉ. शर्मा ने आदेश की अनुपालना ने शाम को ही सूचना केंद्र में पदभार ग्रहण कर लिया है।

अतिरिक्त निदेशक का पदभार ग्रहण करने के बाद डॉ. तुक्तक भानावत, कपिल श्रीमाली एवं मुकेश हिंगड़ ने डॉ. कमलेश शर्मा का उपरना ओढ़ाकर सम्मान किया।

शारदा सालवी को पीएचडी की उपाधि

उदयपुर (ह. सं.)। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ ने शारदा सालवी को पीएचडी की उपाधि प्रदान की। शारदा सालवी ने अपना शोधकार्य 'नवोदय विद्यालय द्वारा ग्रामीण प्रतिभा के प्रोत्साहन एवं राष्ट्रीय एकीकरण हेतु विद्यार्थियों के लिए किए जा रहे प्रयासों का अध्ययन' विषय पर शिक्षा संकाय के संघटक लोकमान्य तिलक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की पूर्व प्राचार्य व अधिष्ठाता प्रो शशि चित्तौड़ा के निर्देशन में पूर्ण किया।

केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय का चिंतन शिविर

महिला एवं बाल विकास देश-प्रदेश की प्रगति की आधारशिला : मुख्यमंत्री

उदयपुर (सुजस)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि महिला एवं बाल विकास देश एवं प्रदेश की प्रगति की आधारशिला है। इनके सशक्तीकरण से एक अच्छे परिवार, समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार महिलाओं एवं बच्चों के उत्थान के लिए पूरी संवेदनशीलता से कार्य कर रही है। हम इनसे जुड़ी योजनाओं और कार्यक्रमों का प्रभावी, पारदर्शी और गुणवत्तापूर्ण क्रियान्वयन सुनिश्चित कर रहे हैं ताकि विकसित भारत-विकसित राजस्थान के लक्ष्य को साकार किया जा सके।

श्री शर्मा शनिवार को उदयपुर में केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय के तत्वावधान में आयोजित चिंतन शिविर के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि यह चिंतन शिविर महिलाओं एवं बच्चों के विकास के लिए एक महत्वपूर्ण मंच साबित होगा। इस शिविर में हम साथ मिलकर इनके भविष्य को और अधिक सशक्त बनाने की दिशा में चिंतन करें जिससे महिला एवं बाल विकास को नई दिशा मिले।

मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2014 के बाद देश में अभूतपूर्व बदलाव लाए हैं। वे राष्ट्र को मजबूत बनाने के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने नई योजनाओं एवं नवाचारों से देश के विकास में नया अध्याय जोड़ा है। श्री शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री मातृशक्ति तथा बच्चों के समग्र विकास के लिए समर्पित हैं, उनके अनुसार देश में महिला, युवा, किसान तथा मजदूर चार जातियां हैं। जिनके उत्थान एवं सर्वांगीण विकास के लिए सरकार काम कर रही है।

श्री शर्मा ने कहा कि आंगनबाड़ी केंद्रों पर 3 से 6 वर्ष के बच्चों को पोषाहार के साथ अतिरिक्त पोषण के लिए सप्ताह में तीन दिन गर्म दूध उपलब्ध कराने के लिए मुख्यमंत्री अमृत आहार योजना शुरू की गई है। राज्य सरकार 2 हजार आंगनबाड़ी केंद्रों को आदर्श आंगनबाड़ी के रूप में विकसित कर रही है।

उन्होंने कहा कि आंगनबाड़ी केन्द्रों के संचालन में सहयोग करने वाले स्थानीय आमजन का सम्मान करना चाहिए। राज्य सरकार महिला एवं बाल विकास विभाग द्वारा संचालित प्रत्येक योजना की निरंतर मॉनिटरिंग, मूल्यांकन तथा आकलन कर रही है जिससे योजनाओं का लाभ पात्र व्यक्ति तक पहुंचना सुनिश्चित हो सके।

मुख्यमंत्री ने कहा कि केन्द्र सरकार की प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना के तहत मिलने वाली प्रोत्साहन राशि को राज्य सरकार ने 5 हजार से बढ़ाकर 6 हजार 500 रुपये कर दिया गया है। साथ ही, दिव्यांग गर्भवती महिलाओं को 10 हजार रुपये की सहायता दी जा रही है। श्री शर्मा ने कहा कि बालिका सशक्तीकरण हेतु लाडो प्रोत्साहन योजना, कालीबाई भील उड़ान योजना जैसी महत्वाकांक्षी योजनाओं का संचालन किया जा रहा है। राज्य सरकार ने महिलाओं की सुरक्षा के लिए भी कई कदम उठाए हैं। उन्होंने कहा कि पालनहार योजना से राज्य के 6 लाख बच्चों के लिए आर्थिक सहायता भी उपलब्ध करवाई जा रही है।

श्री शर्मा ने कहा कि महिलाओं एवं बच्चों के स्वास्थ्य एवं पोषण की देखरेख के साथ उनकी सुरक्षा, शिक्षा, कौशल संवर्द्धन, रोजगार, उद्यमिता, सामाजिक सम्मान, महिला हितैषी नीतियों के प्रभावी क्रियान्वयन सहित विभिन्न पहलुओं के प्रति सरकार पूरी तरह संवेदनशील है। केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं के माध्यम से अंत्योदय की संकल्पना को साकार किया जा रहा है।

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती अन्नपूर्णा देवी ने कहा कि चिन्तन शिविर की परिकल्पना प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने की। उनका दृष्टिकोण है कि विकसित भारत के निर्माण के लिए महिलाओं और बच्चों का सशक्त होना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि महिला एवं बाल विकास की चुनौतियों और उनके समाधान को लेकर आयोजित यह चिन्तन शिविर महिला-बाल विकास के समेकित उत्थान का नया अध्याय लिखेगा। उन्होंने केंद्र सरकार की ओर से संचालित मिशन सक्षम आंगनबाड़ी, पोषण अभियान 2.0, मिशन शक्ति और मिशन वात्सल्य के बारे में जानकारी देते हुए उन्हें और अधिक बेहतर ढंग से क्रियान्विति किए जाने पर चर्चा की।

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री श्रीमती सावित्री ठाकुर ने कहा कि चिन्तन शिविर का मंच विचारों को कार्यों और कार्यों को परिणाम में बदलने का अवसर सिद्ध होगा। प्रधानमंत्री का सपना है कि देश की प्रत्येक महिला और बालक सशक्त बने, तभी देश का विकास संभव है। इस संकल्प को पूर्ण करने के लिए यह चिन्तन शिविर महत्वपूर्ण प्रयास है।

प्रदेश की उपमुख्यमंत्री एवं महिला एवं बाल विकास मंत्री दिया कुमारी ने कहा कि डबल इंजन की सरकार विकसित भारत-विकसित राजस्थान के लक्ष्य को लेकर निरंतर आगे बढ़ रही है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार महिला सम्मान, शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए लगातार काम कर रही है। साथ ही नव पीढ़ी को सुदृढ और समर्थ बनाने के लिए भी संकल्पित है। आंगनबाड़ी कार्मिकों के मानदेय में बढ़ोतरी की गई है। साथ ही, विभागीय योजनाओं के माध्यम से महिला एवं बाल विकास के संकल्प को मूर्त रूप दिया जा रहा है।

इससे पूर्व मुख्यमंत्री श्री शर्मा के यहां पहुंचने पर दीप प्रज्वलित करते हुए शिविर का विधिवत शुभारंभ किया गया। कार्यक्रम दौरान मुख्यमंत्री और केन्द्रीय मंत्रियों सहित विभिन्न राज्यों से पहुंचे अतिथियों का मेवाड़ी परंपरा के अनुसार पगड़ी पहनाकर स्वागत किया।

इस अवसर पर राजस्थान महिला एवं बाल विकास विभाग राज्यमंत्री डॉ मंजू बाघमार, ओड़िशा की उपमुख्यमंत्री श्रीमती पार्वती परिदा, महिला एवं बाल विकास विभाग के शासन सचिव महेंद्र सोनी, निदेशक ओपी बुनकर, अतिरिक्त निदेशक मेघराजसिंह मीणा सहित केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार के कई वरिष्ठ अधिकारी, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के मंत्रीगण, वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे। संचालन राजेन्द्र सेन और माधुरी शर्मा ने किया।

स्वतंत्रता संग्राम और राजस्थान पर्यटन पुस्तकें विमोचित

कोटा (ह. सं.) वैश्विक संस्था हिंदी साहित्य भारती के मदर टेरेसा स्कूल में आयोजित कार्यक्रम में हिंदी साहित्य भारती के अन्तर्राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व शिक्षा मंत्री उत्तरप्रदेश रविन्द्र शुक्ल ने डॉ. प्रभातकुमार सिंघल और डॉ. शशि जैन द्वारा संयुक्त रूप से लिखित पुस्तक 'धरोहरों की धरती राजस्थान का पर्यटन सफर' एवं साहित्यकार योगेंद्र शर्मा की पुस्तक 'भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की भूली बिसरी यादें' का विमोचन किया गया। इस दौरान हिंदी साहित्य भारती के रजनीश भारतीय, योगेंद्र शर्मा, जगदीश सोनी, सीताराम मीणा, आचार्य परमानंद काठिया, विशिष्ठ अतिथि जितेंद्र निर्मोही, रामेश्वर शर्मा 'रामू भैया', डॉ. शशि जैन, महेश पंचोली भी उपस्थित थे।

डॉ. प्रभातकुमार सिंघल ने बताया कि पुस्तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की भूली बिसरी यादें मुख्य रूप से भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के अचर्चित रहे सेनानियों पर केंद्रित है। इस दृष्टि से लेखक ने अनूठा प्रयास किया है। राजस्थान के स्वतंत्रता आंदोलन के प्रसंगों के साथ केसरीसिंह बारहट के योगदान को बताया गया है। अन्य विषयों में हरिवंशराय बच्चन, पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहार वाजपेयी के योगदान और हाड़ोती की संस्कृति को दर्शाया गया है। यह पुस्तक राजस्थान पर्यटन के क्षेत्र में एक सम्पूर्ण गाइड है और पर्यटन की दृष्टि से उपयोगी है।

समारोह में कृष्णा कुमारी, डॉ. वैदेही गौतम, श्यामा शर्मा, डॉ. हिमानी भाटिया, गरिमा राकेश गौतम, रेणु राधे, राजेंद्रकुमार जैन, एडवोकेट अख्तर खान 'अकेला', के. डी .अब्बासी सहित हिंदी साहित्य भारती के अनेक गणमान्य सदस्य मौजूद रहे।

धन-धन है म्हारी मक्कड़ माता

धन-धन है म्हारी मक्कड़ माता
धन्न माता राबड़ी।
बहुत बचपन में मैंने अपने साथियों सहित खेतलते हुए ये पंक्तियां सुनी थी। इसके नीचे की पंक्तियां थी-
कड़ियां बेच खूंगाली बेची
भैंस लाया बाखड़ी
रानीजी दुवाहने बैठे
चरवी भर गई आखड़ी
धन-धन है मक्कड़ माता।।

वर्षों बाद आज जब राबड़ी माता का नाम सुनता हूं तो धन्य हो जाता हूं।

मक्का का मोटा अनाज पूरे हिन्दुस्तान में प्रसिद्ध है जिसकी विभन्न मौसमों खासकर सर्दी में कई चीजें बनाई जाती हैं। पूरे देश में आज जब राबड़ी देवी का नाम सुनता हूं तो मुझे घोर आश्चर्य होता है। पटना के लालू प्रसाद यादव ने अपनी पत्नी राबड़ी देवी को मुख्यमंत्री बना दिया। कितना आश्चर्य होगा जब लालूजी यादव अपनी पत्नी का नाम, रूप राबड़ी देवी सुनकर गद्गद् हो जायेंगे।

समय की गति और घड़ी को कोई बांध और परख नहीं सकता है लेकिन नामों का विचित्र संसार है जिसका अध्ययन कम महत्त्वपूर्ण नहीं है।

- डॉ. महेन्द्र भानावत

अब आप शब्द रंजन समाचार पत्र
इस लिंक पर भी पढ़ सकते हैं-
https://thetimesofudaipur.com/shabd-ranjan/

SAI TIRUPATI UNIVERSITY, UDAIPUR

(Approved under Section 2(f) of UGC Act 1956)

Web: www.saitirupatiuniversity.ac.in | Email: info@saitirupatiuniversity.ac.in

ADMISSION OPEN 2024-25

PIMS PACIFIC INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES

• M.B.B.S. • MD/MS • M.Sc. in Medical Sciences | Contact : 95878 90081, 95878 90096

PIMS VENKTESHWAR INSTITUTE OF PARAMEDICAL SCIENCES
9257016003, 9587890142

• Diploma (Approved by RPMC)
- Radiation Technology
- Operation Theater Technology
- Medical Laboratory Technology
- ECG Technology
- Cath Lab Technology.
- Dialysis Technology,Blood Bank Technology,
- Endoscopy Technology,
- EEG Technology, Ophthalmic
- Technology

• B.Sc.
Medical Lab Technology, Ophthalmic Technology, Radio Imaging Technology

PIMS VENKATESHWAR INSTITUTE OF PHARMACY
(Approved by PCI) 9257016004, 9587890082

• D. Pharm • B. Pharm

PIMS VENKTESHWAR COLLEGE OF PHYSIOTHERAPY
9257016002, 958789082

• B.P.T. • M.P.T.

PIMS RESEARCH PROGRAM
9587890082, 9358883194

- Ph.D. (Nursing)
- Ph.D. (Anatomy)
- Ph.D. (Bio-Chemistry)
- Ph.D. (Microbiology)
- Ph.D. (Pharmacology)
- Ph.D. (Physiology)
- Ph.D (Management)
- Ph.D (Physiotherapy)

PIMS VENKTESHWAR SCHOOL/COLLEGE OF NURSING
9587890082, 9257016001

• G.N.M. • B.Sc. (Nursing)

• M.Sc. Nursing
Child Health, Mental Health, Community Health, Midwifery and Obstetrical, Medical Surgical

PIMS VENKTESHWAR INSTITUTE OF FASHION TECHNOLOGY
9672978017, 9587890063

• Fashion Design • Journalism & Mass Communication • Interior Design
(Graduation/ Post Graduation/ Diploma/ Advance Diploma)

PIMS VENKTESHWAR INSTITUTE OF MANAGEMENT STUDIES
9672978017, 9672978038

• BBA (International Business)
• MBA (Hospital Administration & Health Care Management)

PIMS INSTITUTE OF COMPUTER SCIENCES
9672978017, 9587890063

• Bachelor of Computer Application (B.C. A)

PIMS PACIFIC DENTAL COLLEGE & HOSPITAL
(Recognised by DCI) 9116132834

• B.D.S • M.D.S

ADMISSION HELPLINE : 9587890082, 9358883194

PIMS HOSPITAL, UMARDA, UDAIPUR

NABH ACCREDITED

Emergency : 0294-3510000

EMAIL : INFO@PACIFICMEDICALSCIENCES.AC.IN |
WEB : WWW.PACIFICMEDICALSCIENCES.AC.IN |
UMARDA RAILWAY STATION ROAD, UDAIPUR (RAJ.)

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, न्यू भूपालपुरा उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं
मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत, उप संपादक : अर्थांक भानावत।
फोन : 0294-2429291, मोबाइल-9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।